SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 06 • AUGUST 2025

हिन्दी मासिक अगस्त 2025

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

सुलतान टीपू शहीद रह०

भारत वर्ष के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुलतान टीपू शहीद का नाम सदैव सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। इस शम-ए-आज़ादी के परवाने ने जिस वालहाना अंदाज़ में देश की आज़ादी के लिए जान कुरबान करने की जो परमपरा स्थापित की उससे दिलों में हमेशा आज़ादी के संकल्प और साहस के चराग़ रौशन रहेंगे।

(प्रोफ़ेसर ख़लीक़ अहमद निज़ामी)

भूतपूर्व वी०सी० मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अगस्त 2025 वर्ष 24 अंक 06

सरपरस्त

हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक

मु0 गुफ़रान नदवी

उप सम्पादक

जमाल अहमद नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

Mob. 7348339655

0522-2740406 (8:00 am to 1:00 pm)

E-mail:sachcharahi@nadwa.in

https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

SACCHA RAHI

SACCHA RAHI

A/c. No. 10863759642

IFS Code: SBIN0000125

Swift Code: SBINNB157

State Bank of India,

Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

भारत हमको प्यारा है

भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो भारत वर्ष हमारा है।।
गंगा जमुना की तहजीबों का यह इक गहवारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो भारत वर्ष हमारा है।।
देश के हम मतवाले हैं और देश हमारा अपना है।
यहीं पे हमको जीना है और यहीं पे हमको मरना है।।
हिंदू मुस्लिम सिख इसाई सबका यही तराना है।
मत बांटो तुम हम सबको यह सदियों प्रेम पुराना है।।
दूर रहो उन गद्दारों से जो नफ़रत को फैलाते हैं।
देशभक्ति का नारा देकर देश में आग लगाते हैं।।
यही मुबीन की विनती है अब देश को मत बर्बाद करो।
प्यार की बोली हरदम बोलो दिलों को बस आबाद करो।।

(मुबीन फतेहपुरी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।

Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
स्वतंत्रता संग्राम और मुसलमान	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	11
मैं लाल किला हूँ	इदारा	12
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	14
औरंगज़ेब आलमगीर	मौलाना सय्यद इनायतुल्लाह नदवी	17
जंगे आज़ादी में ग़ाजीपुर की भूमिका	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	21
बुर्कीना फ़ासो का युवा नेता	इं0 जावेद इक़बाल	24
फिर देख ख़ुदा क्या करता है (पद्य)	मौलाना ज़फर अली खाँ	26
बेगम हज़रत महल	सै0 सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	27
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	30
इस्लाम तेरा सबको नज़र आना चाहिए	शमीम एक़बाल खाँ	31
स्वतंत्रता दिवस पर स्वयं से करें वादे	सय्यद इरफ़ान हबीब	33
वहम का नतीजा	मायल ख़ैराबादी	35
स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम युवाओं	मौलाना इक़बात नदवी	37
जुल्म का अंजाम (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	39
स्वास्थ्य	डॉ0 सुमित अग्रवाल	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-नहलः-

अनुवादः—

ताकि हमने उसको जो कुछ दिया है वह उसकी नाशुक्री करने लगे, तो मजे कर लो, फिर आगे तुम्हें पता चल जाएगा(55) और वे ऐसों के लिए हमारी दी हुई रोजी में से हिस्सा लगाते हैं जिनको जानते भी नहीं, अल्लाह की कसम जो भी तुम झूठ बांध रहे हो जरूर उसके बारे में तुमसे पूछा जाएगा[1](56) और वे अल्लाह के लिए लड़कियां ठहराते हैं, वह पवित्र है और अपने लिए वह जो दिल चाहता है(57) और जब उनमें किसी को लड़की का शुभसमाचार सुनाया जाता है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह घुट कर रह जाता है(58) जो बुरा शुभसमाचार उसे मिला उसके कारण लोगों से मुंह छिपाए फिरता है (सोचता है कि) उसे अपमान सहन करके रहने दे या मिट्टी में दबा दे, देखो कैसे बुरे फैसले वे किया करते हैं[2](59) जो आखिरत को नहीं मानते उनकी बुरी मिसाल है और अल्लाह की मिसाल बहुत ही बुलंद है और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी (हिकमत) वाला है(60) और अगर अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार के बदले में पकड़ ही लेता तो जमीन में कोई चलता फिरता बाकी न छोड़ता लेकिन वह तो एक निर्धारित अवधि के लिए उनको मोहलत देता है फिर जब वह अवधि आ जाएगी तो एक घड़ी न पीछे हो सकेंगे न आगे(61) और अल्लाह के लिए वह चीजें गढ़ते हैं जिनसे खुद घृणा करते हैं और उनकी जबानें झूठ में रंगी रहती हैं कि सब भलाई उन्हीं के लिए है, साबित हो चुका कि निश्चित रूप से उनके लिए आग है और वे (उसी की ओर) बढ़ाए जा रहे हैं(62) अल्लाह की कसम हमने आपसे पहले कितनी उम्मतों (सम्प्रदायों) में पैगम्बर भेजे तो शैतान ने उनके काम उनके लिए सुहावना बना दिये तो आज भी वही उनका मित्र है और उनके लिए दुखद अजाब है[3](63) और हमने किताब आप पर इसलिए उतारी ताकि आप उनके मतभेदों को उनके लिए खोल दें और ताकि मानने वालों के लिए हिदायत और रहमत (दया) हो[4](64) और अल्लाह ही ने ऊपर से पानी बरसाया तो उसने ज़मीन के बेजान होने के बाद जान डाल दी बेशक इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो बात सुनते हैं(65) और निश्चित रूप से तुम्हरे लिए चौपायों में भी सोचने समझने का बड़ा साधन है, उनके पेट में जो गोबर और खून है उसके बीच से हम तुमको शुद्ध दूध पिलाते हैं[5], पीने वालों के लिए स्वादिष्ट(66) और खजूर और अंगूर के फलों से (भी शिक्षा प्राप्त करो) जिससे तुम शराब और पवित्र रोजी तैयार करते हो बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो बुद्धि से काम लेते हैं[6](67) और आपके पालनहार ने मधुमक्खी को आदेश भेजा कि पहाड़ो में और पेड़ों में और जहां वे छत्ता डालते हैं घर बना ले(68) फिर हर प्रकार के फलों से (रस) चूस ले फिर अपने पालनहार के

(सुझाए हुए) रास्तों में आसानी के साथ चली जा, उसके पेट से विभिन्न रंगों का एक पेय निकलता है जिसमें लोगों के लिए शिफा (आरोग्य) है बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो विचार करते हैं[7](69) और अल्लाह ने ही तुम को पैदा किया फिर वह तुम्हारी आत्मा को निकाल लेता है और तुमसे कुछ निकम्मी उम्र तक पहुंचा दिये जाते हैं जिसके फलस्वरूप वे अवगत होकर भी चीजों से बेखबर हो जाते हैं बेशक अल्लाह खूब जानता है सामर्थ्य रखता है[8](70) और अल्लाह ही ने तुममें से किसी को किसी पर रोजी में बड़ाई प्रदान की है तो जिनको भी बड़ाई प्राप्त है वे अपने गुलामों (सेवकों) को अपनी रोज़ी लौटा ही नहीं देते कि फिर वे उसमें बराबर ही हो जाएंगे[9] तो क्या फिर वे अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं(71) और अल्लाह ने तुम्हीं में से तुम्हारी पत्नियाँ बनाई और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हें बेटे और पोते दिये और पवित्र चीज़ों में से तुम्हें रोज़ी दी, तो क्या फिर वे झूठ को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की वे नाशुक्री करते हैं[10] (72)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. अरब के मुश्रिक अपनी खेतियों और पशुओं में एक भाग मूर्तियों के नाम पर चढ़ावा के लिए निर्धारित करते थे उसी की ओर संकेत है कि जिन मूर्तियों की उनको वास्तविकता भी मालूम नहीं अल्लाह की दी हुई रोजी को उनके लिए चढ़ावा चढ़ा देते हैं।

2. अरब के कुछ कबीले फरिश्तों को खुदा की बेटियां बताते थे, कहा जा रहा है कि जो चीज तुम अपने लिए पसंद नहीं करते उसको अल्लाह से जोड़ते हो? तुम्हारे फैसले कैसे अनोखे और दुर्भाग्यपूर्ण हैं, उसकी हिकमत न होती तो एक क्षण में वह तुम सबको समाप्त कर देता लेकिन दुनिया में मोहलत दे रहा है और पकड़ के लिए उसने क़यामत का दिन निर्धारित कर रखा है, उस दिन सब कुछ सामने आ जाएगा।

3. सब बुराइयां करते थे और कहते थे कि जब हम अल्लाह के यहां जाएंगे तो हमारे लिए आनंद ही आनंद होगा, शैतान ने उनके शिर्क को और कुकृत्यों को उनकी नज़र में अच्छा बना दिया है इसलिए वे ऐसी बातें करते हैं, इसके बदले में उनको दुखद अजाब का मजा चखना पड़ेगा।

4. विभिन्न रास्तों पर चलने वालों के सामने सही और सच्चा रास्ता आ जाए और फिर मानने वालों को सही रास्ता मिल जाए और वे रहमत (दया) के हकदार हों।

5. यह अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानी है, आयत में जिस क्रम से दूध बनने का उल्लेख है आज वह वैज्ञानिक शोध से भी सिद्ध हो चुका है. जानवर चारा खाता है, वह गोबर बनता है फिर जब आंतों में से होकर गुज़रता है तो पौष्टिक सामग्री उन आंतों की मोटी खाल में चली जाती है और वहां से खून के द्वारा पूरे शरीर में पहुंचती है फिर थनों की कोशिकाओं में वह धीरे–धीरे दूध के रूप में चली जाती है।

6. जब यह आयत उतरी उस समय तक शराब हराम नहीं हुई थी, लेकिन इसी आयत में पवित्र रोजी के मुकाबले में उसका वर्णन करके एक बारीक संकेत इस ओर कर दिया कि शराब पवित्र रोजी नहीं है।

शेष पृष्ठ ..36...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

एहसान शनासी (कृतज्ञता) का बयानः-

मोमिन का मामला ही अजीब है :—

हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः मोमिन का मामला भी खूब है, उसके हर मामले में भलाई ही भलाई होती है और यह बात ईमान वाले के सिवा किसी और को हासिल नहीं। अगर उसको खुशी हासिल होती है वह शुक्र अदा करता है। तो यह उसके लिए भलाई ही भलाई है। अगर उसको कोई दुःख तकलीफ़ पहुंचती है, वह सब्र करता है तो यह भी उसके हक में भलाई ही भलाई होता है। (मुस्लिम)

खाने—पीने पर अल्लाह की हम्द (गुणगान) करनाः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अल्लाह तआला बन्दे से खुश होता है (इस बात पर) कि वह खाए तो अल्लाह की तारीफ (गुणगान) करे और पिये तो अल्लाह का शुक्र अदा करे (धन्यवाद दे)। (मुस्लिम)

शुक्रगुजार (कृतज्ञ) होनाः—

हज़रत मुगीरः बिन शुअ्ब रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ी कि पैरों में सूजन आ गयी, आप सल्ल0 से कहा गया कि आप क्यों इतना कष्ट उठाते हैं, आपके तो अगले पिछले गुनाह माफ कर दिये गए हैं? आप सल्ल0 ने फरमायाः क्या मैं शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दा न बनूँ? । (तिर्मिजी)

अल्लाह तआला के नाम की बड़ाईः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जो अल्लाह तआला की पनाह (शरण) चाहे उसको पनाह दो, और जो अल्लाह का नाम लेकर माँगे उसको दो, और जो अल्लाह के नाम से अमान (सुरक्षा) माँगे उसको अमान दो, और जो तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करे तुम उसका बदला दो, अगर बदला देने की ताक़त न हो तो उसके हक में इतनी दुआ करो कि तुम को यह महसूस होने लगे कि तुम ने उसका बदला चुका दिया।

(अबू दाऊद व नसई)

सद्व्यवहार का बदला तारीफ़ और धन्यवाद भी हैः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि मुहाजिरीन ने हुजूर सल्ल0 से कहा कि सारे अज्र व सवाब (पुण्य) तो अंसार ले गए, हम ने उन से बेहतर किसी माल वाले को खर्च करने वाला नहीं देखा, कम माल वालों में उन से ज्यादा दिलदारी और हमदर्दी करने वाला नहीं देखा उन्होंने हम सब के बोझ को पूरा संभाल लिया। आप सल्ल0 ने फरमायाः क्या तुम लोग उनकी तारीफें नहीं करते हो और उनके लिये दुआएं नहीं करते हो? मुहाजिरीन ने कहा क्यों नहीं। आप सल्ल0 ने फरमायाः तुम्हारे इस अमल से उनके हुस्ने सुलूक (अच्छे व्यवहार) का बदला हो गया। (अबू दाऊद व नसई)

एहसान का बदलाः—

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिसको कोई अतिया (दान) दिया गया फिर वह मालदार हो गया तो चाहिए कि वह अतिया देने वाले को उसका बदला दे। अगर वह गरीब ही रहा तो उस देने वाले की तारीफ करनी चाहिए (तो इस तरह से) उसने उसका शुक्र अदा कर दिया। और जिस ने उसको छुपाया (खामोश रहा) उसने नाशुक्री की। (अबू दाऊद व तिर्मिजी)

❖❖❖

स्वतंत्रता संग्राम और मुसलमान

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

स्वतंत्रता और प्राधीनता आज़ादी और गुलामी ये दो शब्द हैं, दोनों एक दूसरे के विपरीत और विलोम हैं, सदैव से स्वतंत्रता और आज़ादी को पसन्द किया गया, पराधीनता और गुलामी को नापसन्द किया गया, मानव इतिहास में जब जब इन्सानों की स्वतंत्रता छीनी गई या स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ तो समाज में टकराव हुआ और संघर्ष शुरु हो गया, वास्तविक स्वतंत्रता यह है कि प्रत्येक इन्सान को सम्मानीय जीवन व्यतीत करने का अवसर मिले यही दुनिया के स्वामी और पालनहार का उद्देश्य है, जिसको उसने अपनी किताब ''कुरआन शरीफ़'' में बयान किया है:–

''और निश्चित रूप से हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया, और थल और जल में उनको सवारी दी और उनको अच्छी–अच्छी रोज़ी दी और अपनी सृष्टियों में बहुतों पर उनको ख़ास रुत्बा प्रदान किया''।

(बनी इस्राईल अयात–70)

हमारे देश में जाति और वंश की बुनियाद पर लोगों को पूजनीय बना दिया जाता है उनके अतिरिक्त लोग नीच और अछूत समझे जाते हैं, यहां तक उनको दलित कहा जाता है, इस्लाम ने इस दृष्टिकोण को बदल दिया, इस्लाम यह कहता है कि इन्सान यदि ईमान और नैतिकता के साथ है, और छोटे बड़े गुनाहों से बचता है, तो वह उच्चकोटि का इन्सान है, आदम की औलाद होने में सारे इन्सान समान हैं, और प्रत्येक इन्सान सम्मान योग्य है। अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया–

''ऐ लोगो! तुम्हारा पालनहार एक है तुम्हारा बाप भी एक है तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से बने थे, अल्लाह के नज़दीक़ तुममें सबसे ज़्यादा सम्मानीय वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा पाकबाज़ है, किसी अरबी को ग़ैरअरबी, पर श्रेष्ठता नहीं मगर ''तक़वा'' संयम की बिना पर''।

इस्लाम ने मानव बुद्धि में अपनी शिक्षा द्वारा जो बदलाव पैदा किया वह आज़ादी की कल्पना है जो मुसलमान की ज़िन्दग़ी के हर विभाग में दिखाई देता है, आज़ादी उस अर्थ में नहीं, जिस अर्थ में पश्चिमी विचारकों के यहां पाई जाती है जहां हर प्रकार की छूट है, जहां इन्सान, इन्सान के बजाए हैवान बन जाता है। इस्लाम में आज़ादी की कल्पना केवल एक अल्लाह की गुलामी, से संबंधित है, एक अल्लाह जो पूरे संसार का स्वामी और संचालक है, उसकी गुलामी में आने के बाद इन्सान दूसरों की गुलामी से आज़ाद हो जाता है। अपनी इच्छा को अल्लाह की मरज़ी के ताबे (अधीन) बना देता है। सबसे ज़्यादा क़ीमती चीज़ जान है वह अपनी जान को अल्लाह की दी हुई एक अमानत समझता है, इसलिए वह अल्लाह की मरज़ी के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने और अल्लाह की राह में जान देने को अपने लिए सबसे बड़ा सम्मान और सौभाग्य समझता है, ज़िन्दग़ी गुज़ारने और जान देने के जो नमूने मुसलमानों की तारीख़ में मिलते हैं वह दूसरी क़ौमों की तारीख़ में नहीं मिलते हैं, सहाबा किराम रज़ि0 की ज़िन्दगी में ये उच्च विशेषता बहुत नुमाया नज़र आती है, मुसलमान इन्सान की गुलामी को सबसी बड़ी लानत समझता है, हज़रत उमर रज़ि0 का यह कथन जो उन्होंने मिस्र के

गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 के बेटे के क़िस्से में कहा था, इस नज़रिये की सबसे बड़ी मिसाल है उन्होंने कहाः—

तुमने इनको कबसे गुलाम बना लिया जब कि उनको उनकी माओं ने आज़ाद पैदा किया था, इसलिए मुसलमान इन्सान की गुलामी का सबसे बड़ा दुशमन और उसके मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा आगे आगे नज़र आता है, वास्तव में साम्राज्य इन्सान को गुलाम बनाने का नाम है, यही वजह है कि जब यूरोप महाद्वीप की साम्राजी ताक़तें भारत वर्ष की ओर बढ़ीं और यहाँ अपने क़दम ज़माने लगी तो सबसे पहले मुसलमान उलमा ने इस ख़तरे को महसूस किया, हिन्दुस्तानी उलमा के प्रधान और प्रमुख हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी के बड़े बेटे शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी ने 1803 ई0 में सबसे पहले अंग्रेज़ों के विरुद्ध फ़तवा दिया और एलाने जंग किया फिर तो अंग्रज़ों के विरुद्ध हवा चल गई लोग आते गये और कारवाँ बनता गया, शाह अब्दुल अज़ीज़ के प्रसिद्ध शागिर्द मुजाहिदे आज़ादी सय्यद अहमद शहीद रायबरेलवी हैं जो जवानी की उम्र में 1831 ई0 में शहीद हुए और बड़ी संख्या में उनके साथियों ने काला पानी और जेल की सजाए काटीं, सय्यद साहब के साथियों में उलमा—ए—सादिक़पुर (पटना) का बहुत बड़ा योगदान है जिन्होंने जानी माली बड़ी— बड़ी क़ुरबानियां दीं, सय्यद अहमद शहीद ने अपने ज़माने के बड़े बड़े राजाओं और महाराजाओं के नाम पत्र लिखे कि अंग्रेज़ों को देश से निकालने का प्रयास करें ताकि देश सुरक्षित हो जाये और तबाही से बच जाये, यहाँ पर केवल एक पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं, जो उन्होंने राजा हिन्दू राव वज़ीर ग्वालियर को लिखा था, पत्र फ़ारसी में है उसका उर्दू अनुवाद हिन्दी लिपि में है, पत्र पढ़ कर आप महसूस करेंगे कि पत्र दिल की गहराइयों और बड़ी दर्दमन्दी से लिखा गया हैः—

''जनाब को खूब मालूम है कि ये परदेसी समुद्र पार के रहने वाले और ये सौदा बेचने वाले दुनिया जहाँ के ताजदार और सल्तनत के मालिक बन गये हैं, बड़े बड़े अहले हुकूमत की हुकूमत और उनकी इज़्ज़त व हुरमत (मर्यादा) को ख़ाक में मिला दिया है, जो हुकूमत व सियासत के मर्द मैदान थे वह हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, इसलिए मजबूरन चन्द ग़रीब बे सरोसामान कमर हिम्मत बाँध कर खड़े हो गये। महज़ अल्लाह के दीन की ख़िदमत के लिए अपने घरों से निकल आए, ये अल्लाह के बन्दे हरगिज़ दुनियादार और जाह तलब नहीं हैं, महज़ अल्लाह के दीन की खिदमत के लिए उठे हैं, माल व दौलत की उनको ज़र्रह भर लालच नहीं, जिस वक़्त हिन्दुस्तान इन ग़ैर मुल्की दुशमनों से खाली हो जाएगा, और हमारी कोशिशों का तीर मुराद के निशाने पर पहुँच जाएगा हुकूमत के ओहदे और मनसब उन लोगों को मिलेगें जिनको उनकी तलब होगी, और इन देशी शासकों, राजाओं की शौकत व कूवत की बुनयाद मज़बूत होगी''।

यूरोप महाद्वीप के विभिन्न देशों और क्षेत्रों से लोग आये उन आने वालों में पुरतगाली, डच, फ्रांसीसी, और अंग्रेज़ हैं, इनमें पारस्परिक लड़ाइयाँ हुईं और भारतीय शासकों से लड़ाइयाँ हुईं अन्त में ब्रिटिश साम्राज को प्रभुत्व प्राप्त हुआ प्रारम्भ में यह लोग व्यापार के उद्देश्य से आये फिर इनकी नियतें और इरादे ख़राब होने लगे इसके बाद भारत के शासक बनने के लिए षड़यंत्र रचने लगे, अंग्रेज़ों की प्रसिद्ध पालिसी ''डिवाइड एण्ड रूल'' लड़ाओ और हुकूमत करो, बहुत सफल हुई जिसके परिणाम स्वरूप उनका अधिकार एक

एक राज्य पर होता गया, यहाँ तक भारत जैसा विशाल देश ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया, परन्तु भारत वासियों ने हिम्मत नहीं हारी, भारत वासियों और अंग्रेज़ों के बीच लम्बा संघर्ष चला, हिन्दू और मुसलमान दोनों ने एकता के साथ यह जंग लड़ी, जिस समय अंग्रेज़ों का आक्रमण भारत वर्ष पर हुआ उस समय भारत वर्ष के शासक मुसलमान थे, इसलिए अंग्रेज़ों के अत्याचार और बर्बरता के सबसे ज़्यादा निशाना मुसलमान बने, इसकी बड़ी दर्दनाक दास्तान है।

एक समकालीन इतिहासकार लिखता हैः—

''23 हज़ार अहले इस्लाम को फाँसी दी गयीं, सात दिन बराबर क़त्ल आम रहा, इसका हिसाब नहीं, अपने नज़दीक़ गोया तैमूरी वंश का सफ़ाया कर दिया, बच्चों तक को मार डाला औरतों से जो सुलूक़ किया, बयान से बाहर है, जिसके सोचने से दिल दहल जाता है।'' (क़ैसरुत— तवारीख़, भाग—2, पेज 454, लेखक सय्यद कमालुद्दीन हैदर)।

भारत का सबसे पहला व्यक्ति जिसने अंग्रेज़ों से मोर्चा लिया वह मैसूर का साहसी और स्वाभिमानी शासक फ़तेह अली खाँ टीपू सुल्तान (शहादत 1799 ई0) टीपू ने भारत के राजों, महाराजों और नवाबों को अंग्रेज़ों से जंग पर आमादा करने की कोशिश की, पूरी ज़िन्दगी अंग्रेज़ों से युद्ध करते रहे, क़रीब था कि अंग्रेज़ों के सारे मनसूबों पर पानी फिर जाए और वह इस मुल्क से बेदख़ल हो जाएं मगर अंग्रेज़ों ने दक्षणी भारत के राजाओं को अपने साथ मिला लिया और आखिरकार इस मुजाहिद बादशाह ने 4 मई, 1799 ई0 को सरंगा पटम के युद्ध स्थल में शहीद होकर सफलता प्राप्त की और इतिहास में अपना स्थान बनाया, उन्होंने अंग्रेज़ों की ग़ुलामी और क़ैदी बनने पर मौत को प्रधानता दी, उनका प्रसिद्ध कथन हैः— ''गीदड़ की सौ साल की ज़िन्दग़ी से शेर की एक दिन की ज़िन्दगी अच्छी है'' जब जनरल ''हार्स'' को टीपू सुल्तान की शहादत की ख़बर मिली तो उसने उनकी लाश पर खड़े हो कर ये शब्द कहे कि ''आज से हिन्दुस्तान हमारा है''।

जनरल ''हार्स'' के इन शब्दों का अनुमान कीजिए कि टीपू सुल्तान की शहादत के बाद हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों का रास्ता रोकने वाला कोई नहीं, उनकी शहादत के लगभग 150 साल बाद हमारा देश आज़ाद हुआ, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने अपने ''यंग इण्डिया'' में टीपू सुल्तान की देश भक्ति और रवादारी को खुल कर स्वीकार किया था और कहा था कि वतन और क़ौम में उनसे बुलन्द मर्तबा कोई न था।

स्वतंत्रता संग्राम में जिन मुसलमानों ने क़ुर्बानी दी और अपनी जानों का बलिदान दिया उनकी सूची बहुत लंबी है, संक्षेप में कुछ प्रसिद्ध उलमा के नाम देते हैं जिनकी कोशिशों और क़ुरबानियों से देश आज़ाद हुआ, जो निम्नलिखित हैं—

शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी, असीर मालटा, शेख़ुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी, असीर मालटा, मौलाना अब्दुल बारी फ़िरंगी महली, इमामुल हिन्द मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान सेवहारवी, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मौलाना शौकत अली, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी, अल्लामा फज्ले हक ख़ैराबादी, मुफ़्ती किफायतुल्लाह मुरादाबादी, मोलवी अहमदुल्लाह शाह, मौलाना हसरत मुहानी वग़ैरह ये ऐसे महान लोग हैं जिनके नाम इतिहास में सदैव जीवित रहेंगे, उनका जीवन निम्नलिखित पद्य के अनुकूल था—

आइने जवाँ मरदाँ, हक गोई व बेबाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

रियाकारीः-

"रियाकारी" (दिखावा) भी हकीकत में अन्दर की बीमारी है जो अपने आपको हर जगह हाई लाइट करने के नतीजे में पैदा होती है, आदमी के अन्दर ये बात उसके मिजाज में दाखिल है कि वो अपनी बेइज़्ज़ती बर्दाश्त नहीं कर पाता, वो चाहता है कि हर जगह उसके साथ इज़्ज़त का बर्ताव हो, ये बात संयमित रूप में बुरी नहीं, बल्कि स्वाभिमान पसंद किया गया है, मगर यही चीज आगे बढ़ कर खुद्नुमाई में दाखिल हो जाती है और फिर आदमी दूसरों को दिखाने के लिए ऐसे काम करता है जो उसकी इज़्ज़त का जरिया बनें, इसके नतीजे में चाहे कुछ देर के लिए किसी की निगाह में काबिले इज़्ज़त ठहरे मगर अल्लाह के यहाँ बे इज़्ज़त हो जाता है और फिर धीरे धीरे समाज में भी उसकी कलई खुल जाती है।

ये बात इख़्लास के खिलाफ है और इख्लास हर अमल के कुबूल होने की शर्त है, हदीस में आता हैः—

अनुवादः—"जो ऐसा काम करे कि दुसरे को भी मेरे साथ नियत में शरीक करे तो मैं ऐसे शख्स को और उसके शिर्क को उसके हाल पर छोड़ देता हूँ।

(मुस्लिम शरीफः 7666)

ये शिर्क—ए—खफी (छुपा शिर्क) जिसके नतीजे में काम बर्बाद हो जाते हैं, और ये ऐसा खतरनाक मर्ज है जो बड़े बड़े कामों को बर्बाद कर देता है, एक हदीस में इरशाद हैः—

"सबसे पहला शख्स जिसके खिलाफ अल्लाह की अदालत की तरफ से फैसला दिया जाएगा, एक आदमी होगा जो (मैदान—ए—जिहाद) में शहीद किया गया होगा, उसे खुदा के सामने लाया जाएगा, फिर अल्लाह तआला उसको बताएगा कि मैंने तुझे क्या क्या नेमतें दी थीं, वो अल्लाह की नेमतों को पहचान लेगा, तो अल्लाह तआला पूछेगा कि तुमने इन नेमतों का क्या हक अदा किया, वो जवाब देगा कि मैं ने आप की राह में जिहाद किया, यहाँ तक कि मैं शहीद कर दिया गया, अल्लाह तआला फरमाएगा कि तूने झूठ कहा, तूने तो इसलिए जिहाद में हिस्सा लिया था ताकि तेरी बहादुरी के चर्चे हों (लिहाजा तेरा मक़सद हासिल हो चुका) और दुनिया में) तेरी बहादुरी के चर्चे हुए, फिर उसके लिए अल्लाह का हुक्म होगा और वो औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा, उसी के साथ एक दूसरा शख्स होगा जिसने दीनी इल्म हासिल किया होगा और दोसरों को उसकी तालीम भी दी होगी और कुरआन भी खूब पढ़ा होगा, उसको भी खुदा के सामने पेश किया जाएगा, अल्लाह तआला उसको भी अपनी दी हुई नेमतों को बताएगा, वो सब इकरार करेगा, फिर अल्लाह तआला उससे पूछेगा, बता तूने मेरी इन नेमतों से क्या काम लिया? (और इनको किन मकसद के लिए इस्तेमाल किया) वो कहेगा, ऐ अल्लाह! मैंने आपका इल्म हासिल किया, और दूसरों को सिखाया, और आप ही की रजा के लिए आपकी किताब कुरआन में मशगूल रहा, अल्लाह तआला कहेगा तूने ये बात झूठ कही, तूने दीनी इल्म इसलिए हासिल किया था और कुरआन तूने इसलिए

शेष पृष्ठ ...34...पर

मैं लाल किला......

(इदारा)

> **मैं लाल किला हूं। हर हिंदुस्तानी मुझे जानता है। मेरा एक नाम ''किला–ए–मुबारक'' भी है। मैं अपने देश के हर स्वतंत्रता दिवस का गवाह हूं। मैं दिल्ली के बीते लगभग 375 बरसों का साक्षी हूं। मैंने मुगलिया दौर का स्वर्णिम काल देखा तो इसका पतन भी। अगर हालिया दौर की बात हो तो मैं 15 अगस्त पर तिरंगे झण्डों से सजी सड़कों, नारंगी, हरे और सफेद रंग से सजे चेहरों और फिजाओं में देशभक्ति के गीतों को बजते हुए देखता–सुनता हूं।।**

आज़ादी का सबसे रोशन प्रतीकः–

मेरे जेहन में 29 अप्रैल 1639 की भी यादें ताजा हैं। शुक्रवार के दिन 5वें मुगल बादशाह शाहजहां ने मेरी बुनियाद रखने का हुक्म दिया था। वह उनके शासनकाल का 12वां साल था। शाहजहां ने मुझे कुछ हिंदू ज्योतिषियों और मुस्लिम धर्मगुरुओं की सलाह के बाद सलीमगढ़ के पास तामीर करवाने का फैसला लिया था। आप चाहें तो शाहजहां की जीवनी ''बादशाहनामा'' से मेरे दावे की तस्दीक़ कर सकते हैं। मुझे सर सैयद अहमद खान की किताब ''आसारुस्सनादीद'' (पूर्वजों की निशानियां) से पता चला है कि मेरे निर्माण के लिए 50 लाख रुपये रखे गए थे। शाहजहां ने अफसरों से कहा था कि किला तैयार करने में बहुत वक़्त नहीं लगना चाहिए। उनके हुक्म पर सारे हिंदुस्तान से माहिर कारीगरों ने दिल्ली में डेरा जमा लिया था। शाहजहां ने मुझे डिजाइन करने की जिम्मेदारी उस्ताद अहमद लाहौरी को दी जिन्होंने ताजमहल भी डिजाइन किया था। मुझे बनाने के लिए संगतराश, पत्थरों पर भित्ति चित्र *(Mural)* बनाने वाले कारीगर, मूर्तिकार और तमाम मजदूरों ने दिन–रात काम किया। उन्होंने मुझे करीब 9 बरसों में तैयार कर दिया। शाहजहाँ काबुल के दौरे पर थे। खबर सुनते ही फौरन दिल्ली आए। उन्होंने 15 अक्टूबर 1648 को पहली बार मेरा दीदार किया। सच में, वह मेरी खूबसूरती देखते ही रह गए थे। तब किसी ने नहीं सोचा था कि मैं भारत की आजादी का सबसे रोशन प्रतीक बन जाऊंगा।

1857 की क्रांति को देखाः–

देखिए, एक बात समझ लीजिए कि मेरी तारीख की तफ़सील से चर्चा किए बगैर भारत के स्वतंत्रता दिवस की बात अधूरी ही मानी जाएगी। मैने 1857 की क्रांति के दौरान अपने सीने पर गोरे सैनिकों के बहुत–से हमलों को झेला है। मुझे करीब डेढ़ किलोमीटर की परिधि में लाल बलुआ पत्थरों और सफेद संगमरमर से बहुत प्यार से बनाया गया था। जब मेरी दीवारों के आसपास रामलीला होती है तो आप मुझे रात के वक़्त करीब से देखिए। बेशक, 1857 के गदर का मुझसे बड़ा गवाह कौन होगा। मुझे याद है कि अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर उस दौर में यहां (लाल किले) से ही अपनी सेनाओं की सरपरस्ती कर रहे थे। अफ़सोस कि गोरों ने उस

विद्रोह को कुचल दिया था। दिल्ली में जमकर लूटपाट और कत्लेआम किया। उन्होंने बहादुर शाह जफर पर मुकदमा चलाकर उन्हें 1858 में रंगून भेज दिया था। वहीं उनकी मौत हुई।

15 और 16 अगस्त 1947:—

सच कहूं तो मेरे लिए 15 और 16 अगस्त 1947 भी बेहद खास तारीखें हैं। मैं कैसे भूल सकता हूं जब भारत ने अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों से मुक्ति मिलने के बाद 15 अगस्त 1947 को पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया था। पर, एक बात साफ कर दूं कि देश के पहले प्रधानमंत्री नेहरू ने मेरी प्राचीर से तिरंगा फहराने के बाद देश को 16 अगस्त 1947 को संबोधित किया था। उन्होंने आजादी वाले दिन 15 अगस्त को इंडिया गेट से सटे प्रिंसेस पार्क में दोपहर के बाद तिरंगा फहराया था। मेरे और प्रिंसेस पार्क में भी कोई बहुत फासला तो नहीं है। हालांकि अगले साल यानी 15 अगस्त, 1948 को पंडित नेहरू ने मेरी प्राचीर से ही तिरंगा फहराकर भारत के नाम संदेश दिया था। मुझे याद है कि 1947 में उनका भाषण 72 मिनट तक चला था। इसके बाद साल 2016 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 94 मिनट तक लाल किले की प्राचीर से भाषण दिया, जो किसी भी प्रधानमंत्री की तरफ से स्वतंत्रता दिवस पर दिया जाने वाला सबसे लंबा भाषण था।

किसने कितने दिए भाषण:—

मैंने जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, राजीव गांधी, नरसिंह राव, वी.पी. सिंह, एच.डी. देवेगौड़ा, आई. के. गुजराल, डॉ. मनमोहन सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी को मेरी प्राचीर से देश को संबोधित करते देखा–सुना है। चंद्रशेखर भी पीएम थे, पर उन्हें यह मौका नहीं मिला। प्रधानमंत्री के तौर पर सबसे ज़्यादा 17 बार तिरंगा नेहरू ने ही फहराया। उनके बाद इंदिरा ने 16 बार तिरंगा फहराया। मोदी इस साल लगातार 12वीं बार तिरंगा फहराएंगे।

आजादी 15 अगस्त 1947 को ही क्यों?:—

क्या आपको पता है कि ब्रिटिश सरकार ने भारत को 15 अगस्त 1947 को ही क्यों आज़ाद किया? कहते हैं न कि दीवारों के भी कान होते हैं। मैंने बहुत कुछ देखा–सुना है। दरअसल लॉर्ड माउंटबेटन 3 जून 1947 को भारतीय (पढ़ें कांग्रेस) नेताओं से देश को दोफाड़ करने की मंजूरी हासिल कर चुके थे। प्रेस कॉफ्रेंस में लगभग आखिर में एक सवाल लॉर्ड माउंटबेटन से पूछा गया कि ''क्या सत्ता के हस्तांतरण की तारीख तय हुई है?'' माउंटबेटन ने इतना ही कहा– ''भारतीयों के हाथों में सत्ता 15 अगस्त 1947 को सौंपी जाएगी''। इतिहासकार राज खन्ना की किताब ''आजादी से पहले, आजादी के बाद'' में लिखा है– मौलाना आजाद ने माउंटबेटन से अपील की थी कि वह भारत की आजादी की तारीख एक साल के लिए बढ़ा दें। उन्होंने जल्दबाजी में बंटवारे से पैदा हो रही दिक्कतों का हवाला दिया।'' वह 4 किंग एडवर्ड रोड (अब मौलाना आजाद रोड) के बंगले में पत्रकारों से विस्तार से बात कर रहे थे। खैर, माउंटबेटन ने किसी की नहीं सुनी। भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हो गया। माउंटबेटन ने यह नहीं बताया कि 15 अगस्त की तारीख क्यों चुनी, पर राज बताते हैं– ''माउंटबेटन के प्रेस सेक्रेटरी कैम्पवेल जॉनसन ने खुलासा किया था कि 15 अगस्त 1947 का दिन इसलिए चुना गया था क्योंकि 15 अगस्त 1945 को जापान की सेनाओं ने मित्र देशों की सेना के सामने आत्मसमर्पण किया था। इसी दिन दूसरा विश्व युद्ध खत्म हुआ था।'' इससे साफ़ है कि माउंटबेटन चाहते थे कि भारत को उस दिन आजाद किया जाए जो ब्रिटेन के इतिहास में खास दिन है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दी के मुसलमान कवि:-

उस युग में हिन्दी के मुसलमान कवियों ने भी पर्याप्त ख्याति प्राप्त की। रसखान की दो किताबें ''प्रेम वाटिका'' और ''सचान रसखान'' बहुत प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि ब्रज भाषा के पूरे युग में प्रेम की सरमस्ती जितनी रसखान की कविता में है किसी और के यहाँ नहीं मिलती। तानसेन संगीत कला में अद्वितीय होने के अतिरिक्त हिन्दी का कवि भी था। उसकी दो किताबें ''संगीत सार'' और ''रागमाला'' बतायी जाती हैं। इस युग में शेख दानियाल चिश्ती की मृत्यु 1585 ई0 में 111 वर्ष की आयु में हुई। वह भी हिन्दी के बड़े कवि थे। उस युग के दो और कवि कादिर (जन्म 1518 ई0) और मुबारक अली बिलग्रामी (जन्म 1583 ई०) उल्लेखनीय हैं। कादिर पिहानी जिला हरदोई के रहने वाले थे, उनकी कविताएँ आज भी जनता में प्रसिद्ध हैं। मुबारक ने अपनी महबूबा के दस भिन्न अंगों पर 100—100 दोहे लिखे। हिन्दी में उनकी दो किताबें ''अलक शंख'' और ''तिलशंक'' प्रकाशित हो चुकी हैं।

अकबर का बेटा राजकुमार सुल्तान दानियाल भी हिन्दी का कवि था। जहाँगीर उसके सम्बन्ध में अपनी तुज्क में लिखता है कि उसे हिन्दी से रुचि रही और हिन्दी में कविताएँ कहता था जो बुरी नहीं होती थीं।

उसी ज़माने में शेख शाह मुहम्मद फरमली भी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हुए हैं। उनकी महबूबा चम्पा थी, जिसके प्रश्न और उत्तर को उन्होंने बहुत ही आकर्षक ढंग से काव्य रूप दिया है।

साहित्य, संगीत, शिल्प, चित्रकारी (फुनून—ए लतीफा) के क्षेत्र में उदारता:—

उस युग के आते—आते फुनून—ए—लतीफा की और अन्य किस्मों में भी बहुत उदारता का प्रदर्शन होता रहा। मुसलमान हिन्दुस्तान आए तो ईरान और अरब की राग—रागनियाँ जैसे उश्शाक, बोसलीक, यानवा, इस्फहान, बुजुर्ग, कूचक, इराक, हुसैनी, जंगोला, रहवा, हिजाज, मुबारका, करिश्मा, वैअ़त, निशापुरी, कोल, कलबाना, तराना आदि साथ लाए। अमीर खुसरो ने इन राग रागनियों को हिन्दुस्तानी राग—रागनियों से मिलाने की कोशिश की। फिर जौनपुर के शासक हुसैन शाह शर्की (1457—1483 ई0) तो हिन्दुस्तानी राग— रागनियों का ऐसा रसिया हुआ कि उसने स्वयं हिन्दुस्तानी राग—रागनियों को मिलाकर एक वर्जन स्याम और चार टोरियाँ खोजीं और नाम भी शुद्ध हिन्दुस्तानी रखे, जैसे मलहार स्याम, गोरा स्याम, भोपाल स्याम, कनीर स्याम, होमो स्याम, दीघ स्याम, बसन्त स्याम, बरआरी स्याम, स्याम गोदानी, गोविन्द स्याम, पूर्वी याण, जौनपुरी टोड़ी, रामा टोड़ी, रसौती टोड़ी, पहले टोड़ी। ग्वालियर के राजा मानसिंह के दरबार में एक बहुत बड़ा संगीत विशेषज्ञ नानक बख्शू था। उसने हिन्दुस्तानी राग कल्यान को काँगड़ा में बदल कर जो राग पैदा की उनके नाम बाधकी कल्यान और नायकी काँगड़ा रखे।

अबुल फजल ने आईन—ए अकबरी में संगीत के शीर्षक से हिन्दुस्तानी सुरों की जो किस्में लिखी हैं वह ये हैं: खुरज, रखब, गन्धार, मद्धिम, पंजम, ध्यूत, निखार। इसी तरह हिन्दुस्तानी राग की किस्मों में श्रीराग, बसन्त यामालकोस, भेरुम, पंजम,

मेघ, नट नरायण के विवरण लिखे हैं। राग के नाम सारंग, पूर्वी, धतासिरी, रामकली, कराई, सुहो, विषकाल और वैशाख बताए हैं। अलाप की दो किस्में हैं राग अलाप और रूप अलाप लिखी हैं। फिर तान की किस्मों में मेदनी, रिन्दनी, देनबी, भावनी और तारावली का उल्लेख किया है। अकबर काल के आते आते इन सभी किस्मों को मुसलमान संगीत विशेषज्ञों ने अपना लिया था। अबुल फजल ने हिन्दुस्तानी बाजों में जन्तर बीन, कनज, सूर बीन, अम्बरती, सूर मण्डल, सारंगी, पनाक, ओहटी, कंगड़ा, पखाबज आदि का विवरण लिखा है। जो मुसलमान साजिंदों के यहाँ प्रचलित होते जा रहे थे।

चित्रकारी में उदारताः—

अकबर काल में चित्रकारी में भी बहुत विकास प्राप्त हुआ। उस काल में इस कला के रंग मिश्रण, सफाई, कोमलता, ताज़गी और हाथ की दक्षता को वह स्थान प्राप्त हुआ जो फुनून—ए लतीफा के इतिहास का एक रोशन अध्याय बन गया है। अकबर के दरबार में इस कला का स्थान पूर्णता तक पहुँचाने में जहाँ सैय्यद अली तबरेजी, ख्वाजा अब्दुस्समद शीराजी, मुहम्मद शरीफ शींरी कलम, अहमद कश्मीरी, जमशेद, जमाल, दौलत, दौलत खाँ, जाद हुसैन, फर्रुख चेला, फर्रुख कलमान, मिस्कीन और मंसूर आदि थे। वहाँ बसवन्त, बसावन, केशव लाल, मुकुन्द, माधव, जगन, महेश, भीमकरन, तारा, साँवला, हरवंश, राम, बास, भिवानी, धानू, नायक सरजू, नरायण, अन्नत, अस्सी कहार, गोविन्द, जगन्नाथ तुलसी, धनराज, धर्मदास, नन्द कलाँ, नन्द किशोर, नरसिंह, पयाग, पारस प्रेम, फत्तू, बनवारी खुर्द, भगवान, भाग, भीम गुजराती, भूरा, मंगर, लक्ष्मण, लिंगा, शिवदास, शंकर, श्रवण, सूरदास आदि भी थे। इतिहास की किताबों में जो नाम आँखों से गुजरते हैं उनसे अनुमान होता है कि शाही दरबार में हिन्दू चित्रकारों की संख्या अधिक थी। अबुल फजल ने उनमें से कुछ विशेषज्ञों की बड़ी प्रशंसा लिखी है। जैसे बसवन्त के सम्बन्ध में लिखा है कि वह अब्दुस्समद की निगरानी में थोड़े ही समय में दक्ष हो गया और बड़े—बड़े कारनामे यादगार के रूप में छोड़े। बसवन्त के सम्बन्ध में लिखता है कि तराही, चेहरा किताबी, रंग के मिश्रण, मानिन्दनिगारी और कला की अन्य किस्मों में वह अद्वितीय था। कुछ कला विशेषज्ञ उसको बसवन्त पर वरीयता देते हैं। मुसलमान और हिन्दू चित्रकारों की मिली—जुली विशेष योग्यताओं से चित्रकारी की वह कला पैदा हुई जो मुगल चित्रकला कहलायी। अजन्ता की चित्रकारी, रंगों की चित्रकारी, प्रकाश और छाया का विचार, दूरी का एहसास और अंक्षास और देशान्तर में जो कमाल दिखाया गया है उससे मुसलमान विशेषज्ञ चित्रकार अवश्य प्रभावित हुए।

महलों के अन्दर दीवारों पर जो चित्रकारी की जाती उससे भी उदारता का अनुमान लगाया जा सकता है। मरियम अल जमानी, बेगम अर्थात जहाँगीर की माँ के सुनहरे महल के अन्दर जहाँ तरह—तरह के चित्र बने हुए थे। वहाँ चित्रकारी के नमूने भी थे जिनमें उसकी दीवार पर राम और हनुमान जी के चित्र भी थे। अकबर ने जब रामायण और महाभारत के अनुवाद फारसी भाषा में कराए तो उन दोनों को सचित्र भी कराया। इससे न केवल हिन्दुओं की दिलदारी या दिलजोई हुई बल्कि मुसलमानों को यह प्रेरणा भी दिलायी गई कि यह किताबें वह भी शौक से पढ़ें।

दीन—ए इलाहीः—

अकबर ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो तरह—तरह की उदारताएँ दिखायीं वह एक इतिहासकार की दृष्टि में बहुत ही गर्व करने योग्य हैं। ऐसा शासक किसी भी क़ौम के लिए गर्व करने योग्य समझा जा

सकता है परन्तु उसका व्यक्तित्व उसके जारी किए हुए धर्म से आहत होकर रह गया है जो दीन–ए–इलाही के नाग से प्रसिद्ध है। समकालीन इतिहास की किताबों में मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी की मुन्तखबुत्तवारीख और अबुल फज्ल के अकबरनामे के माध्यम से ही उस धर्म को अब तक समझा गया है। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी अकबर की धार्मिक प्रवृत्तियों और धर्म में नई बातें जोड़ने का कठोर विरोध करते रहे। इसलिए उन्होंने तो उस धर्म की धज्जियाँ बिखेर कर रख दी हैं लेकिन अबुल फजल दीन–ए–इलाही का बड़ा ध्वजावाहक था। वह चाहता तो दीन–ए–इलाही की प्रशंसा में अपने कलम की बादशाहत ऐसी दिखा सकता था कि मुल्ला अब्दुल कादिर ने उस धर्म के बारे में जो कुछ लिखा था, वह दबकर रह जाता। अबुल फजल ही के कथन स्वीकार्य समझे जाते लेकिन अबुल फजल उस धर्म के विवरण देने में स्पष्ट रूप से स्वयं ही सावधान प्रतीत होता है। उसके कलम की सारी बादशाहत मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी के लेखों की तुलना में मद्धिम पड़ गयी है। यहाँ हम पहले अब्दुल क़ादिर बदायूँनी के कथनों का सार प्रस्तुत करेंगे जो उनके कथनानुसार अकबर की अधर्मिता और गलत विश्वासों और उसके नए धर्म के सम्बन्ध में लिखा है। फिर अबुल फज्ल ने उस धर्म पर जो कुछ लिखा है वह भी प्रस्तुत किया जाएगा।

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

मशहूर इतिहासकार और मदरसा दीनिया ग़ाज़ीपुर के मोहतमिम मौलाना अज़ीज़ुल हसन सिद्दीक़ी का 13, जुलाई 2025 को इंतकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मौलाना के मौत की ख़बर से ग़ाज़ीपुर और आसपास के जिलों के दीनी व इल्मी, समाजी व सियासी हल्क़ों और अज़ीज़ व अकारिब और चाहने वालों में ग़म की लहर दौड़ गई। मरहूम की नमाज़–ए–जनाज़ा शहर के टाउन हाल मैदान में उनके बेटे मौलाना सऊदुल हसन नदवी ने अदा कराई और हज़ारों की तादाद में शामिल लोगों की मौजूदगी में तद्फीन की गई। मौलाना अपनी ज़ात में एक अंजुमन थे वह अनेकों दीनी, इल्मी और समाजी तन्जीमों और तहरीक़ों के सदर, सेक्रेट्री और सरपरस्त थे। मौलाना के क़लम से बेशुमार किताबें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। मौलाना चूंकि नदवतुल उलमा की मजलिसे इंतिजामिया के एक मुअज़्ज़ सदस्य थे इसलिए मौलाना का नदवे के ज़िम्मेदारों से बड़ा गहरा सम्बन्ध था। इसलिए दुख की घड़ी में हम सब बराबर के शरीक़ हैं। मौलाना के तीन बेटे– डॉ0 सईदुल हसन सिद्दीक़ी, अब्दुल्लाह सिद्दीक़ी, मौलाना सऊदुल हसन सिद्दीक़ी और चार बेटियाँ हैं। अल्लाह इन सबको सब्र जमील अता फरमाए। आमीन।

हम सच्चा रही के समस्त पाठकों से दुआ–ए–मग़फिरत की दरखास्त करते हैं।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

औरंगज़ेब आलमगीर

तारीख़ का इन्साफ़ परवर और इन्सानियत नवाज़ शासक

मौलाना सय्यद इनायतुल्लाह नदवी

क्या औरंगज़ेब ने भाइयों को क़त्ल कराया?

अंग्रेज़ इतिहासकार औरंगज़ेब पर यह गम्भीर आरोप लगाते हैं कि उन्होंने सत्ता प्राप्त करने के लिए बाप को बन्दी बनाया और भाईयों को क़त्ल कर डाला, ये दोनों बातें मनगढ़न्त और निराधार हैं, वास्तविकता यह है कि 1657 ई0 में शाहजहाँ बीमार हुए और उन्होंने अपने बड़े बेटे दारा शिकोह के हाथ में साम्राज्य की बागड़ोर दे दी, दारा शिकोह ने अपने सम्राट होने की घोषणा कर दी, ख़बर जब उनके तीनों भाईयों औरंगज़ेब, शुजा और मुराद को पहुँची तो वह सभी अचम्भे में आ गये, कि मामला क्या है? वह तीनों देहली से काफी दूर थे, औरंगज़ेब दकन में, शुजा बंगाल में, और मुराद गुजरात में गवर्नर की हैसियत से थे, इन तीनों को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बाप का इन्तिक़ाल हो गया, या बाप किसी घातक बीमारी में ग्रस्त हो गये या दारा ने बाप को बेदख़ल करके सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया, इसी संकोच में शुजा ने बंगाल में अपनी बादशाही की घोषणा करदी और बड़ी सेना लेकर आगरा की ओर चल पड़ा, दारा को इसकी ख़बर मिली तो उसने भी एक बड़ी सेना उसका रास्ता रोकने के लिए भेज दी।

इन दोनों सेनाओं में बनारस के करीब घमासान की लड़ाई हुई जिसमें शाह शुजा हार गया और बंगाल वापस लौट गया, इधर औरंगज़ेब ने वास्तविक सुरतेहाल का पता लगाने की कोशिश की तो मालूम हुआ कि शाहजहाँ सख़्त बीमारी में ग्रस्त हैं और उन्होंने दारा के हाथ में सत्ता सौंप दी, इस जानकारी के बाद औरंगज़ेब ने बाप की ख़ैरियत और बीमारी का हाल मालूम करने के लिए आगरा की ओर कूच किया, जब औरंगज़ेब के कूच करने की ख़बर दारा को पहुँची तो दारा ने एक बड़ी फ़ौज उनका रास्ता रोकने के लिए रवाना कर दी, उधर मुराद बख़्श गुजरात से आकर औरंगज़ेब से मिल गया, औरंगज़ेब को ये जब मालूम हुआ कि दारा ने फ़ौज रवाना की है तो उन्होंने दारा को पत्र लिखा कि मैं लड़ने के लिए नहीं आ रहा हूँ, मैं सिर्फ़ बाप की बीमारपुरसी के लिए हाज़िर हुआ हूँ, लिहाज़ा मेरा रास्ता न रोका जाए, फिर उन्होंने अपने बाप को कई पत्र लिखे जिनमें उनकी ख़ैरियत मालूम की, लेकिन उनको किसी पत्र का जवाब नहीं मिला, बल्कि दारा की फ़ौज निरन्तर औरंगज़ेब का रास्ता रोकने के लिए आगे बढ़ती रही, यहां तक धरमात के स्थान पर औरंगज़ेब का मुकाबला दारा की फ़ौज से हुआ, जिसमें दारा की फ़ौज हार गई, फिर दारा स्वयं एक बड़ी फ़ौज ले कर सामने आया तो भी औरंगेज़ेब ने उसको युद्ध करने से रोका, लेकिन दारा युद्ध करने पर डटा रहा, चुनांचि सामोगढ़ के स्थान पर लड़ाई हुई, दारा बुरी तरह हारा और भाग निकला।

अब औरंगज़ेब के लिए रास्ता साफ़ था, औरंगज़ेब आगरा पहुँच कर पहले अपने वालिद शाहजहाँ से मिले उनकी बीमार पुरसी की, फिर अपनी बादशाहत की घोषणा की, बाप को जहां वह थे उसी जगह बरक़रार रखा, आगरा के क़िले के अन्दर शाही महल था, उसी महल में वह रहते थे, वहाँ से निकाल कर किसी जेल में उन्हें बन्दी नहीं बनाया था, यह तो

अंग्रेज़ इतिहासकारों का कमाल है कि उन्होंने ऐसे अनुचित शब्दों का प्रयोग किया जिसको हर कोई पढ़ने वाला यह समझेगा कि औरंगज़ेब ने बाप को क़ैदी बनाकर जेल में डाल दिया, वह कहते हैं कि बाप को क़िले में क़ैद कर दिया, एक पढ़ने वाला क़िले के शब्द पर ध्यान नहीं देगा बल्कि क़ैद के शब्द पर ध्यान देगा, क़िला किसे कहते हैं, इस ओर किसी का ध्यान भी नहीं जोयगा, क़िला वह जगह है जहाँ शाही महल होता है और शाही महल कोई जेल नहीं है, बल्कि वहां हर प्रकार के आराम और आसाइश की सुहूलतें होती हैं, बादशाह वहीं स्थान करता है। शाहजहाँ जब बीमार हुए तो वहीं आराम करने लगे वहीं अपनी मौत तक वह आराम करते रहे, आरामगाह को कोई क़ैदख़ाना कहने लगे तो इससे बढ़ कर धांधली क्या हो सकती है? औरंगज़ेब ने तो बाप के लिए तमाम सुहूलतें उपलब्ध करा दीं, उनके पास लोग मिलने जुलने आते थे। निर्धन और ग़रीब लोग भी आते थे जिन्हें वह दाद–दहिश (दान दक्षिणा) भी करते थे, उनकी सेवा के लिए हर समय ख़िदमतगार उपस्थित रहते, थे इनके अलावा उनकी बेटी जहाँ आरा 24 घण्टे देख भाल के लिए रहती थीं, औरंगज़ेब समय समय पर रूपये पैसा उपलब्ध कराते थे, ताकि अपनी मर्ज़ी के अनुसार ख़र्च कर सकें, उनको किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता था, शासन की बागडोर अलबत्ता औरंगज़ेब ने अपने हाथ में ले ली क्योंकि बाप ने पहले ही अपनी बीमारी की वजह से ख़ुद ही शासन से अलाहदगी इख़्तियार कर ली थी, बाप को क़ैद करके सत्ता पर कब्ज़ा करने का यह आरोप जो अंग्रेज़ों की ओर से औरंगज़ेब पर लगाया गया है वह सर्वथा ग़लत और निराधार है।

औरंगज़ेब तो वह इन्सान हैं जिन्होंने अपने बाप के सम्मान में बड़ी उम्र में क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ किया, उसका क़िस्सा यह है कि जब औरंगज़ेब के बेटे ने हिफ़्ज़ क़ुरआन किया तो अपने वालिद शाहजहाँ को ख़ुशख़बरी दी, यह सुन कर शाहजहाँ ने कहा इससे मुझे ख़ुशी नहीं है मुझे ख़ुशी तो उस वक़्त होती जब मेरा कोई बेटा हाफ़िज़े क़ुरआन होता और मुझे हश्र के दिन ताज पहनाया जाता, शाहजहाँ की बात सुन कर औरंगज़ेब ने फैसला कर लिया कि वह ख़ुद क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करेंगे ताकि उनके वालिद शाहजहाँ को यह सम्मान प्राप्त हो सके, चुनांचे क़ुरआन हिफ़्ज़ करना शुरु कर दिया और थोड़े ही दिन में हाफ़िज़ बन गये, यह उस समय की बात है जब वह बादशाह बन चुके थे, हाफ़िज़ बनने के बाद वह पाबन्दी से रमज़ान में हर साल तरावीह में क़ुरआन सुनाते थे, हर दिन क़ुरआन की तिलावत करते थे ताकि यह हिफ़्ज़ बाक़ी रहे, इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि उन्हें अपने वालिद की ख़ुशी का कितना ख़्याल था, ऐसा व्यक्ति बाप को क़ैद कर सकता है? इसको सोचा भी नहीं जा सकता।

तीन भाइयों को क़त्ल करके सत्ता पर क़ब्ज़ा करने का जो आरोप औरंगज़ेब पर लगाया जाता है, यह भी मनगढ़न्त है, जहाँ तक दारा शिकोह की बात है तो उसने जैसा कि बताया गया कि अपनी बादशाहत का ऐलान करने के बाद सबसे पहले उसकी जंग शुजा से हुई, शुजा को पराजित करने के बाद उसने औरंगज़ेब का रास्ता रोकने के लिए फ़ौज रवाना की, औरंगज़ेब ने उस फ़ौज को पराजित करके अपना सफ़र जारी रखा, फिर दारा शिकोह ख़ुद एक बड़ी फ़ौज लेकर औरंगज़ेब का रास्ता रोकने के लिए निकल खड़ा हुआ, दोनों में घमासान की जंग हुई, दारा शिकोह हार गया और भाग खड़ा हुआ, औरंगज़ेब ने आगरा पहुँच कर शासन को अपने हाथ में ले लिया।

दारा शिकोह पंजाब होता हुआ गुजरात पहुँचा, वहां किसी मुग़ल फ़ौजी ने उसे गिरफ़्तार कर लिया, फिर उसे राजधानी आगरा लाया गया, जहाँ अदालत में उसके विरुद्ध जुर्म इरतिदाद (धर्म परिवर्तन) का मुक़दमा चला, इस जुर्म के साबित होने पर क़ाज़ी ने उसको सज़ा–ए–मौत का फ़ैसला सुनाया, ज्ञात हो कि इस्लाम में इरतिदाद के जुर्म की सज़ा मौत है, और दारा शिकोह ''मुरतद'' होकर ईसाई बन चुका था, जिसकी बिना पर उसको मौत की सजा दी गई।

और जहां तक शुजा की बात है तो दारा शिकोह से हारने के बाद उसने औरंगज़ेब से भी लड़ने की कोशिश की थी, एक फ़ौज लेकर आगरा की ओर बढ़ा जब उसको मालूम हुआ कि दारा को पराजित करके औरंगज़ेब ने अपनी बादशाही की घोषणा कर दी है, फ़तेहपुर के मुक़ाम पर औरंगज़ेब की फ़ौज से उसे करारी हार का सामना करना पड़ा तो वह फिर बंगाल की ओर वापस भाग निकला, वहां वह अपनी फ़ौज और खानदान के साथ अराकान (बरमा) पहुँचा, अराकान से वह मक्का मुकर्रमा का सफ़र कश्ती से करना चाहता था लेकिन अराकान के राजा ने उसकी बीवी और बच्चियों के ज़ेवरात छीन लिए और उनका अपमान किया तो शुजा और उसके सिपाहियों की झड़प हो गई और उसके परिणाम में शुजा मारा गया, यह घटना 1663 ई0 में हुई। अब बताओ कि औरंगज़ेब ने कहां शुजा को क़त्ल किया बल्कि जब औरंगज़ेब को शुजा के क़त्ल की ख़बर मिली तो उसने मुग़ल सिपहसालार मीर जुमला को अराकानी फ़ौज पर आक्रमण करने का आदेश दिया, चुनांचि मीर जुमला ने अराकान पर फ़ौज कशी करके उसके बहुत सारे इलाक़ों को मुग़लिया सलतनत में शामिल कर लिया और यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि दारा और शुजा के खिलाफ़ औरंगज़ेब ने जंग शुरु नहीं की थी, बल्कि उन दोनों ने औरंगज़ेब के खिलाफ़ फ़ौजकशी की थी, औरंगज़ेब कभी भी भाइयों से जंग करना नहीं चाहते थे, दारा ने औरंगज़ेब को अपने वालिद की बीमार पुरसी से रोकने के लिए दो बार उनसे जंग की, शुजा ने औरंगज़ेब से शासन छीनने के के लिए उनके ख़िलाफ़ फ़ौज कशी की, जबकि औरंगज़ेब ने शुजा को यह पैग़ाम भेजा था कि तुम बंगाल के बादशाह बने रहो मैं तुम्हें सत्ता से बेदख़ल नहीं करूँगा लेकिन उसके दिल में पूरे हिन्दुस्तान का बादशाह बनने का भूत सवार था, इसलिए वह जंग पर अड़ा रहा और बुरी तरह हार गया, अब दोनों हारने के बाद इधर उधर भागते रहे, एक गिरफ़्तार हुआ और इरतिदाद के जुर्म में क़ाज़ियों के एक सर्वसम्मति निर्णय से क़त्ल किया गया और दूसरा अराकानी राजा ''सांदा सोदामा'' के हाथों क़त्ल हुआ।

जहाँ तक शहज़ादा मुराद की बात है तो मुराद और औरंगज़ेब में ऐकता थी और दोनों ने मिलकर दारा की फ़ौज से जंग की थी, वह मुराद को बहुत चाहता भी था, मुराद को भी औरंगज़ेब ने क़त्ल नहीं किया, बल्कि मुराद ने सय्यद अली तक़ी नाम के एक व्यक्ति को क़त्ल किया था, उसके बेटे ने मुराद के ख़िलाफ़ अदालत में ''क़िसास'' अर्थात बदला लेने का मुक़दमा दायर किया था, क़ाज़ी ने ''क़त्ले अमद'' इरादतन हत्या का सुबूत मिलने पर मुराद को ''क़िसास'' में क़त्ल किये जाने का फैसला सादिर किया औरंगज़ेब ने ''मक़तूल'' (मृतक) के बेटे से दरख़्वास्त भी की कि दियत (जुर्माना) लेकर मुराद की जाँ बख़्शी पर राज़ी हो जाए लेकिन वह इस पर राज़ी नहीं हुआ, इस्लामी क़ानून के अनुसार मक़तूल के वारिसीन की रज़ामन्दी के बिना क़ातिल

की जाँ बख़्शी नहीं हो सकती, चुनांचि क़िसास (मृत्युदण्ड) में मुराद को क़त्ल कर दिया गया, इससे तो औरंगज़ेब की न्यायप्रियता का सुबूत मिलता है। औरंगज़ेब, क़ानून और न्याय के मामले में किसी की रिआयत नहीं करते थे। ये उनके ख़लीफ़ा राशिद होने की पहचान है। इसी न्याय और इन्साफ़ के तक़ाजे पर अमल करते हुए औरंगज़ेब ने एक हिन्दू पण्डित की बेटी की शिकायत पर अपनी ओर से नियुक्त किए हुए गर्वनर इब्राहीम को बहुत ही अपमान के साथ क़त्ल करवा दिया, जबकि उसके जुर्म को रंगे हाथों उन्होंने पकड़ लिया, इसी न्याय के आधार पर अपने चहेते भाई का क़त्ल किया जाना भी गवारा कर लिया।

आख़िर यह क्या बात है कि सच्ची और उचित बातों को तोड़ मरोड़ कर औरंगज़ेब को इतना बदनाम करने की अंग्रेज़ों ने इस क़दर कोशिश क्यों की?

इसके कई कारण हैं, प्रथम यह कि अंग्रेज़ों को ऐसी शर्मनाक शिकस्त और ज़िल्लत किसी शासक से नहीं पहुँची थी जैसा कि औरंगज़ेब से ''चाइल्ड वार'' के बाद उठानी पड़ी थी। दूसरा कारण यह कि औरंगज़ेब को बदनाम करके हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच फूट डालना उनके लिए बहुत आसान था। तीसरा कारण जो एक बहुत बड़ा रहस्य था, वह बहुत कम लोगों को मालूम है, वह रहस्य यह था कि एक अंग्रेज़ जासूस बड़ी चालाकी के साथ मुग़ल दरबार में पहुँच गया था, जिसका नाम रेवरण्ड हेनरी बूज़ी है, वह पादरी भी था और जासूस भी, शाहजहां से निकटता प्राप्त करके वह दारा शिकोह का विश्वास पात्र बन गया था उसको विश्वास था कि हिन्दुस्तान का अगला बादशाह दारा शिकोह होगा, इसलिए दारा शिकोह से करीब होकर उसकी ऐसी जेहन साज़ी की कि उसे इस्लाम से नफ़रत पैदा हो गयी और वह अन्दर से ईसाई हो गया था, अब सिर्फ़ ईसाइयत का ऐलान करना बाक़ी था, यह तै था कि हिन्दुस्तान पर पूर्ण कन्ट्रोल प्राप्त करने के बाद वह ईसाई धर्म में प्रवेश होने का ऐलान करता, रेवरण्ड बूज़ी को भलीभांति मालूम था कि दारा शिकोह के सत्ता संभालने के बाद ईसाइयत के ऐलान करने में सबसे बड़ी रुकावट औरंगज़ेब बन सकता है, इसलिए बाप की मौजूदगी में अगर दारा शिकोह सत्ता प्राप्त करले तो तीनों भाईयों में से कोई ज़्यादा प्रतिरोध नहीं कर पायेगा, यदि प्रतिरोध करेंगे, तो मुग़लिया सलतनत घरेलू लड़ाई का शिकार हो कर कमज़ोर हो जाएगी फिर अंग्रेज़ों का सत्ता पर कब्ज़ा करना आसान हो जाएगा।

अगर दारा शिकोह तमाम भाईयों पर प्रभुत्व प्राप्त करने में सफल हो गया तो फिर दारा शिकोह द्वारा पूरे देश में ईसाइयत का फैलाना आसान हो जाएगा और हिन्दुस्तान एक ईसाई देश बन जाएगा।

इस षड़यंत्र को औरंगज़ेब ने बड़ी तीव्रता, चिन्तन मनन, कूटनीति, वीरता और शैर्य से असफल बना दिया, इसीलिए एक अंग्रेज़ डॉक्टर फ्रांसिस वरनियर ने अपनी एक याददाश्त (स्मृति पत्र) लिखी जिसमें शुरु से आख़िर तक औरंगज़ेब की छवि को बुरी तरह से आहत करने का भरपूर प्रयास किया है, यही वह याददाश्त है जिसे अंग्रेज़ इतिहासकारों ने अपनी बुन्याद बना कर तारीख लिखी, इस याददाश्त (स्मृति) में ''वरनियर'' ने औरंगज़ेब के विरुद्ध दिल खोल कर भड़ास निकाली और उनके व्यक्तित्व को दाग़दार बना दिया है, बाद के अंग्रेज़ इतिहासकारों ने उसमें अधिक नमक मिर्च लगा कर औरंगज़ेब की ऐसी तारीख़ लिख दी कि उसे पूरी हिन्दुस्तानी तारीख़ का सबसे बुरा शासक बना कर पेश कर दिया।

शेष पृष्ठ ...23...पर....

जंगे आज़ादी में ग़ाज़ीपुर की भूमिका

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

कुछ दशक पहले तक गाजीपुर की पहचान पिछड़े जिलों में होती थी, आज़ादी के लगभग पचास साल तक गाजीपुर विकास के क्षेत्र में उपेक्षित रहा, इधर दो दशक के आसपास से गाजीपुर की कुछ सुध–बुध सरकारों ने लेनी शुरू की है और कुछ विकास होता दिखने लगा, लेकिन आज हमारे लेख में उसके विकास और पिछड़ेपन की बात नहीं होगी बल्कि उसकी वीरता और बलिदान की बात होगी। ये वह कुरबानी है जो उन्होंने जंगे आजादी में दी थी।

1909 गाजीपुर गैजेटियर के 29वें जिल्द में तत्कालीन कलेक्टर एच0आर0आरनेवल लिखता है कि" 1857 ई0 तक कोई महत्वपूर्ण घटना गाजीपुर के इतिहास में पेश नहीं आई। 1857 के बाद जनता में बेचौनी फैलने लगी, गाजीपुर के ख़जाने में काफी रुपया था जिसको बचाने के लिए बनारस से सेना बुलानी पड़ी। पुलिस बेबस थी और अदालतों के सामने डकैती होती थी, विवश होकर मार्शल लॉ लगाना पड़ा और डाकुओं का सर कुचला गया"।

इतिहास में दर्ज है कि गाजीपुर शहर के रौजा के पास के एक बगीचे में अत्याचारी अंग्रेजों ने उसके पेड़ों पर फांसी के फंदे लटका दिए थे जिनपर अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को मौत के आगोश में सुला दिया गया था। अंग्रेजों से दो–दो हाथ करने के बाद सय्यद अहमद शहीद ने जो जेहाद शुरू किया उससे गाजीपुर भी अछूता नहीं रहा। वह 1857 से बहुत पहले 1819 में जेहाद के सफर पर जाते हुए गाजीपुर से गुजरे थे और यहां छह दिन ठहरे थे। गाजीपुर शहर के अतिरिक्त यूसुफपुर, जमानिया, बारा, भीतरी और बाजैदपुर वह रुके थे। उनके खलीफा सय्यद जाफर अली नकवी जमानिया में कई माह तक ठहरे रहे और अंग्रेजों के खिलाफ जबरदस्त माहौल बनाया।

सय्यद अहमद शहीद के दो खलीफा मौलाना मुहम्मद फसीह गाजीपूरी और मौलाना करामत अली जौनपुरी अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद के लिए स्वयंसेवक और धनराशि इकट्ठा करके भेजने का काम कर रहे थे। मौलाना फसीह साहब के उभारने पर गाजीपुर के कमसार इलाके के लोग पंजाब मे जाकर जेहाद में शरीक होते रहे और अंग्रेजों के दांत खट्टे करते रहे। गाजीपुर के नवाब शेख फरजंद अली ने जब सय्यद अहमद शहीद का 1819 में गाजीपुर आगमन हुआ तो उन्होंने ने सय्यद अहमद शहीद का जोरदार स्वागत किया और अपने नवजवान बेटे को उनके सामने ये कहकर पेश किया कि "मेरी तमन्ना है कि अल्लाह की राह में उसकी गर्दन पर हज़रत इस्माईल जबीहुल्लाह की तरह छुरी चले। अंततः नवाब साहब की ये आरजू पूरी हुई और उनका बेटा देश के लिए कुर्बान हो गया। इसी संदर्भ में ये बात दर्ज है कि सय्यद साहब के नेतृत्व में जो अंग्रेजों के खिलाफ बालाकोट में जंग हुई उसमें गाजीपुर के कई योद्धा शहीद हुए जिनके नाम ये हैं, अमजद अली, असगर अली दरगाही, हसन खान जमानिया, शेख दरगाही गाजीपुरी, खुदा बख़्श गाजीपुरी, अब्दुल कादिर गाजीपुर, शेख़ मुहम्मद अली गाजीपुरी।

सय्यद अहमद शहीद के गाजीपुर जनपद में आगमन का एक लंबे समय तक ये लाभ मिला कि आम जन में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का नया हौसला

पैदा हुआ और वह जगह जगह अंग्रेजों के खिलाफ बगावत पर उतरने लगे। विशेष रूप से 1857 की गदर में आमजन ने जमानिया तहसील, थाना और कई सारी सरकारी इमारतें कब्जा करके सय्यद अहमद शहीद के आजादी के मिशन को मजबूती दी।

1857 की गदर के लंबे अरसे के बाद जब खिलाफत आंदोलन की शुरूआत हुई तो गाजीपुर से हजारों लोग जेल गए। गाजीपुर शहर का शायद ही कोई घर बचा हो जिसके घर का कोई सदस्य जेल न गया हो। पड़ोसी जिलों के मुकाबले गाजीपुर में ख़िलाफत आंदोलन का जोर इसलिए भी था कि इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता में शुमार डॉक्टर मुख़्तार अहमद अंसारी गाजीपुर से थे। ज्ञात हो कि इस आंदोलन के दौरान बी अम्मा अपने दोनों बेटों मौलाना मुहम्मद अली जौहर और शौकत अली जौहर के साथ गाजीपुर आई थीं और ऐतिहासिक टाउनहॉल मैदान में आम जन को सम्बोधित किया था।

1919 में जब जमीयतुल उलमा की स्थापना हुई तो गाजीपुर में भी उसकी शाखा स्थापित की गई, उसके नेतृत्वकर्ता में गाजीपुर के मशहूर मदरसा दीनिया के संस्थापक और शिक्षक मौलाना उमर फारूक, मौलाना अबुल हसन सिद्दीकी, मौलाना इस्माईल जबीह और मौलाना असलम फारूकी शामिल थे। गौर तलब है कि मदरसा दीनिया अपने स्थापना के समय से ही स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने लगा था, एक समय आया कि मदरसा दीनिया का छोटा सा कैंपस आजादी के दीवानों की छावनी बन गया, मदरसा के संस्थापक मौलाना उमर फारूक वैसे एकांत स्वभाव के थे मगर जंगे आजादी के महा संग्राम में उन्होंने बड़ा रोल निभाया और बहुतों को स्वतंत्रता संग्राम की आग में कूद पड़ने हेतु उभारा। मदरसा दीनिया के ही कैंपस से अंग्रेजों के खिलाफ एक मैगजीन "खिदमत" के नाम से निकलती थी जिसके संपादक मौलवी वहीदुल्लाह अहरारी गाजीपुरी थे और मदरसा दीनिया के उस्ताद मौलाना इस्माईल जबीह उसके उप संपादक थे। इसी तरह 1940 का व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में चला तो मदरसा दीनिया के तत्कालीन प्रबंधक मौलाना अबुल हसन सिद्दीकी ने कस्बा बारा में अपनी गिरफ्तारी दी और उन्हें छह माह की सजा सुनाई गई। मदरसा दीनिया के ही दो छात्र मौलाना सय्यद अहमद हाशमी (पूर्व सांसद राज्यसभा) मौलाना अजीजुल हसन सिद्दीकी (पूर्व प्रबंधक मदरसा दीनिया) ने अल्पायु के बावजूद जंगे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे।

1920 में जब शेखुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन गाजीपुर आए तो स्टीमरघाट पर हजारों मुसलमानों ने उनका जबरदस्त स्वागत किया और उस बग्घी से जिसपर आप सवार थे घोड़ा खोल कर अपने हाथों से बग्घी खींच कर उन्हें टाउनहॉल के मैदान तक पहुंचाया जहां उनका जोरदार भाषण हुआ। इसी क्रम में जब मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी माल्टा में क़ैद कर दिए गए तो अखिल भारतीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर मुख्तार अहमद अंसारी गाजीपुरी ने उनकी रिहाई के लिए एक अभियान छेड़ा और अंजुमन एआनते नज़रबंदाने इस्लाम के नाम से एक संगठन की बुनियाद डाली और उसकी एक शाखा गाजीपुर में भी स्थापित की। इसी तरह जब 1920 में जमीयतल उलमा ने कलकत्ता सम्मेलन में अंग्रेजों के खिलाफ़ असहयोग का प्रस्ताव पास किया तो गाजीपुर के मुसलमानों ने खुलकर इसका सपोर्ट किया। इस प्रस्ताव के समर्थन में पांच सौ उलमा ने

फतवा दिया जिसमें गाजीपुर के मशहूर फसीही घराने के मौलाना अबुल आला फसीही के भी सिग्नेचर थे।

1925 में जब आसिम बिहारी ने मोमिन कांफ्रेंस की स्थापना की तो उसकी एक शाखा गाजीपुर में भी स्थापित की गई और उससे जुड़कर गाजीपुर के मोमिन अंसार बिरादरी के लोग आजादी की लड़ाई लड़ने लगे। 1930 में जमीयतुल उलमा के अमरोहा सम्मेलन में कांग्रेस द्वारा पारित पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव का स्वागत किया गया तो जमीयत के विचारधारा की पैरवी करने वाली मुसलमानों की बड़ी संख्या कांग्रेस में शामिल हो गई और इस तरह जनपद में स्वतंत्रता आंदोलन की धार तेज हो गई।

जनपद में आजादी की आग धीरे धीरे बहुत से सीनों में धधक चुकी थी, 1942 में कलेक्ट्रेट से यूनियन जैक उतार कर फेंक दिया गया और अंग्रेजों के खिलाफ की गई बगावत के जुर्म में शेरपुर गांव को फिरंगियों ने आग लगा दी। इसी तरह 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में सरजू पांडेय जो बाद में गाजीपुर के सांसद बने के नेतृत्व में कासिमाबाद थाने में आग लगा दी गई और तिरंगा फहरा दिया गया।

वैसे तो जंगे आजादी में गाजीपुर के हजारों लोग शरीक हुए और सबका नाम लेना यहां इस छोटे से लेख में मुश्किल है मगर सरसरी तौर पर हम उनका नाम जरूर लेंगे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसमें डॉक्टर मुख्तार अहमद अंसारी का नाम सरे फेहरिस्त है जो अखंड भारत के अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और आजादी के सभी आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी तरह हकीम अब्दुल वहाब नाबीना, मौलवी गुलाम रब्बानी अब्बासी, मौलवी वहीदुल्लाह अहरारी, शाह अबुल फैज, मौलाना शाहिद फाखरी, अबू जफर अंसारी जैसे हजारों नाम हैं जिन्होंने आजादी की मशाल को जलाए रखा।

❖❖❖

पृष्ठ ..20...का शेष

''फ्रांसिस वरनियर'' भी शाहजहाँ के शासन काल में मुग़लिया दरबार में बड़ी कुरबत रखता था, वह दारा शिकोह का प्राइवेट डॉक्टर भी था, उसने भी दारा शिकोह को इस्लाम का विरोधी बनाने और ईसाइयत का प्रेमी बनाने में बहुत बड़ा रोल अदा किया था उसे इस बात से काफ़ी दुख और रंज हुआ था कि इतने बड़े प्लान के बावजूद दारा शिकोह के हाथ में शासन नहीं रह सका, और इसमें सबसे बड़ी रुकावट औरंगज़ेब बने थे, इसलिए हाथ धोकर वह औरंगज़ेब के पीछे पड़ गया और झूठ, ग़लत बयानी का सहारा लेकर अपनी याददाश्त में औरंगज़ेब के व्यक्तित्व को दाग़दार किया और नुक़सान पहुँचाया ताकि आने वाली नस्लें औरंगज़ेब को बुरा इन्सान समझ कर गालियाँ देती रहें, उसका मिशन बड़ी हद तक सफ़ल हो गया।

लोग ''फ्रांसिस वरनियर'' और अन्य अंग्रेज़ इतिहासकारों की किताबों से मेटर प्राप्त करके औरंगज़ेब से बदगुमान हुए लेकिन स्वयं आलमगीर की लिखी हुई ''रुक़आते आलमगीर'' शेर खाँ लोधी की किताब ''मिरआतुल ख़्याल'' मुल्ला सालेह की किताब ''अमल सालेह'', शाहनवाज़ की ''तारीख़ मासिरुल उमरा'' सनजान राए की किताब ''ख़ुलासतुल तवारीख़'' साक़ी मुसतइद खाँ की किताब ''मआसिर आलमगीरी'', ख़ाफ़ी खाँ निज़ामुलमुल्क की किताब ''मुन्तखबुल–लुवाब और राय बिन्द्राइन की किताब ''लुब्बुत तवारीख़'' की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया जिनमें मूल वास्तविकता और सही हालात सच्चाई के साथ बयान किए गये हैं।

❖❖❖

बुर्कीना फ़ासो का युवा नेता, इब्राहीम तरावड़े

इं0 जावेद इक़बाल

बुर्कीना फासो पश्चिमी अफ़्रीका का एक छोटा सा देश है। इसके उत्तर में माली और नाइजर, पूर्व में नाइजर तथा बेनिन, दक्षिण में टोगो, घाना और कोटे डी आंइवरी देश हैं, यह सभी अफ्रीका के छोटे छोटे देश हैं, स्पष्ट है कि बुर्कीना फासो चारों ओर से खुशकी से घिरा है, इसके पास समुद्री तट नहीं है। इसका क्षेत्रफल दो लाख पचास हजार किलोमीटर से भी कम है (लगभग उतर प्रदेश के बराबर) और इसकी जनसंख्या भी मात्र तीन करोड़ से कुछ कम ही है। यहां की सरकारी जबान फ्रांसीसी है, मगर इंग्लिश तथा अन्य स्थानीय ज़बानों का भी चलन है। यहां के लोगों का मुख्य कार्य खेती बाड़ी है। गरीबी बहुत ज़्यादा है देश की अर्थव्यवस्था अन्य देशों की सहायता पर निर्भर है। मगर अब हालात बदल रहे हैं। हकीकत यह है कि सन् 1896 से फ्रांस ने इस देश को अपने अधिकार में ले लिया था और यहां के संसाधनों पर कबजा कर लिया था। इस देश में सोने की खदानें बल्कि कहिए पहाड़ बहुत हैं। फ्रांस और ब्रिटेन की कंपनियां हज़ारों टन कच्चा सोना वर्षो से निकाल निकाल कर अपने देश ले जाती थीं और यहां के स्थानीय शासकों को थोड़ी बहुत धनराशि रायलटी के रूप में दे दिया करती थीं जो उनके ऐश व आराम के लिए काफी होती थी।। मगर यहां की जनता को दो वक़्त का भोजन भी ठीक से मयस्सर नहीं था।

फ्रांस से इस देश को आजादी 5 अगस्त 1960 को मिली थी, उस समय देश का नाम रिपब्लिक ऑफ अपर वोल्टा हुआ करता था मगर यह आजादी बस कहने भर की थी क्योंकि फ्रांस ने आज़ादी देते समय कुछ ऐसे समझौते किए थे जिससे देश की सुरक्षा फ्रांसिसी फौजों के ही हाथ में रहे, अर्थव्यवस्था अब भी उन्हीं की पालिसियों पर निर्भर थी, करेंसी पर फ्रांस का ही कंट्रोल था। सारांश यह कि प्रोक्ष रूप में शासन की कुन्जी उन्हीं के हाथ में थी। सोने की कानों पर फ्रांस और ब्रिटेन की कम्पनियों के ठेके थे, सोना साफ करने के लिए यहां कोई रिफाइनरी नहीं थी लिहाजा कच्चा माल उन्हीं के देशों में जाकर शुद्ध सोने का रूप लेता था। इस तरह देखा जाए तो स्पष्ट है कि यहां रोजगार के साधन भी न के बराबर थे। विकास के नाम पर कोई योजना न थी। न सड़कें थीं न बिजली थी। इस आधुनिक युग में भी जीवन दो तीन सौ साल पुराने डगर पर चल रहा था।

जनता में असंतोष के कारण कई बार सत्ता परिवर्तन हुआ मगर कोई सरकार स्थाई तौर पर न टिक सकी, आखिरकार सन् 1983 के विद्रोह के बाद थामस संगकारा राष्ट्रपति बने। उन्होंने अपने शासनकाल में देश की उन्नति और जनता के हित में अनेक योजनाएं बनाई, उन्होंने ही 1984 में देश का नाम बदल कर बुर्कीना फासो रखा। इसकी राजधानी औगाडौगू (Ouagadougou) है। यहां मुसलमानों की आबादी 64 प्रतिशत और ईसाइयों की 26 प्रतिशत है। सन् 1987 में सेना के विद्रोह में राष्ट्रपति थामस संगकारा की हत्या कर दी गई। नया राष्ट्रपति ब्लेज कम्पारे का शासनकाल 31 अक्तूबर 2014 तक रहा। मुल्क में विद्रोह होते रहे, स्थाई सरकार न बन सकी। 24 जनवरी सन् 2022 को सेना ने शासन की बागडोर अपने हाथ में लेली और सन्दागो दामिबा को अंतरिम राष्ट्रपति बनाया परन्तु वह सुधार कार्यों को आगे बढ़ाने में सफल न हो सके और न ही उन्होंने सेना का आधुनिकीकरण करने के प्रर्याप्त प्रयास किए। अतः उनकी नीतियों से नाखुश होकर सेना ने उसी वर्ष 30 सितंबर को पुनः विद्रोह कर दिया। इस बार एक नौजवान मुस्लिम कैप्टन इब्राहिम तरावड़े को राष्ट्रपति का पदभार सौंपा गया। इस तरह इब्राहिम तरावड़े रातों रात कैप्टन से राष्ट्रपति बन गए। पद भार ग्रहण करने के बाद न उन्होंने लच्छेदार भाषण दिए, न जनता से लम्बे चौड़े झूठे वादे किए, वह सीधे काम पर लग गए। सबसे पहले उन्होंने फ्रांसीसी

सरकार से किए गए मुआहिदे रद्द कर दिए, सोने की खदानों के ठेके निरस्त कर दिए और फ्रांसीसी रक्षाकर्मियों को एक महीने में देश छोड़ने का अल्टिमेटम दे दिया। पहले तो फ्रांस ने इसका विरोध किया मगर तरावड़े अपने फैसले पर अडिग रहे। आखरिकार फ्रांस को अपने कदम पीछे करने पड़े। अब पश्चिमी मीडिया का ध्यान इस युवा नेता की ओर गया, उसे हैरत थी कि इतनी जल्दी कोई युवा नेता इतने सख़्त फैसले कैसे ले सकता है, मगर जनता की ताकत तरावड़े के साथ थी और तरावड़े की नजर अपने देश को प्रगतिशील देशों की कतार में जल्द से जल्द ला खड़ा करने पर थी। उन्होंने रूस, चीन और तुरकिया से सम्बंध स्थापित किए रूस ने बुर्कीना फासो की सेना को प्रशिक्षण देना आरंभ किया, आधुनिक हथियारों की आपूर्ति स्वीकार की। चीन ने कृषि के क्षेत्र में मदद करना स्वीकार किया। ट्रेक्टर ट्राली वाटर लिफ्टिंग पम्प और खाद वगैरह चीन से मंगवा कर किसानों में मुफ्त बांटे गए। इससे उत्पादन में वृद्धि हुई और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार आया। तुरकिया से ड्रोन मंगवाए गए जो आतंकी गतिविधियों से निपटने में मदद कर रहे हैं। आम बेघर लोगों के लिए आवासीय योजनाएं आरंभ की गई। इन तीन वर्षों में तीन लाख लोगों को अपने घर मिल चुके हैं।

तरावड़े जानते थे कि देश की खुशहाली के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे, लिहाजा सबसे पहले उन्होंने सोना साफ करने के लिए एक रिफाइनरी की स्थापना की। इससे अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी और स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा। सोने की दो खदानें जो ब्रिटिश कम्पनियों के हाथ में थीं उनका राष्ट्रीकरण कर लिया गया। सन् 1924 से अंतर राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) से मिलने वाले 32 मिलियन डॉलर के कर्ज को भी उन्होंने यह कह कर ठुकरा दिया कि हम अफ़्रीका के मेहनती लोग हैं, हमारे पास उपजाऊ धरती है हमें भीख नहीं चाहिए। इस बयान में उनका आत्म विश्वास झलक रहा था। वह IMF के द्वारा दुनिया के देशों को कर्ज के जाल में फंसाने की चाल को समझते हैं। एक और बड़ी समस्या बिजली की थी, देश की 59 प्रतिशत आबादी को बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं थी और जिन को थी भी तो वह 24 घंटे के लिए नहीं थी। बिजली की समस्या से निपटने के लिए तरावड़े ने चीन की मदद से 25 मेगावाट का सोलर सिस्टम स्थापित करना शुरू किया और रूस से एटॉमिक एनर्जी के मुआहिदे किए ताकि देश की जनता को सस्ती और भरपूर बिजली मिल सके। सड़कों की हालत भी अच्छी नहीं थी, अव्वल तो पक्की सड़कें ही नहीं थीं और जो थीं भी, वह टूटी फूटी। अतः उन्होंने सड़क परियोजनाओं पर भी ध्यान दिया जिससे गांव शहर के रिश्ते मजबूत होंगे और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। अपने इन प्रयासों के नतीजे में, केवल तीन वर्षों में, इब्राहिम तरावड़े केवल अपने देश में ही नहीं बल्कि अफ़्रीका के अन्य पड़ोसी देशों के लिए भी एक हीरो समान बन चुके हैं। वह एक ऐसा नेता है जो न किसी से डरता है न किसी के आगे झुकता है और न बिकता है। उनकी भाषा शैली उनका आचरण, उनका मनोबल, खुद्दारी और देश के प्रति समर्पण सब कुछ एक आदर्श शासक जैसा है। वह आम तौर पर सेना की ड्रेस में ही रहते हैं मगर कभी कभी जनता के बीच साधारण वेशभूषा में भी, उनके साथ सहयोग करते नज़र आते हैं। कभी खेतों में रूपाई कर रहे हैं तो कभी किसी स्कूल में छात्रों के बीच उनकी समस्याओं पर चर्चा कर रहे हैं। ऐसे ही एक अवसर पर एक छात्र ने कहा सर कुछ समय बाद आप भी दूसरे शासकों जैसे हो जायेंगे। इब्राहिम तरावड़े ने तुरंत कहा कि उस समय तुम मुझे पद से हटा देना। योरोप की आंखों में अफ़्रीका का यह नौजवान शासक बहुत खटक रहा है, क्योंकि उस में पूरे अफ़्रीका को संगठित करने और योरोपीय ताकतों के खिलाफ उन्हें जागरूक करने का हौसला है। इब्राहिम तरावड़े गर्व से कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि० उनके आइडियल हैं, और वह अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते।

तरावड़े की सफलता इस बात का प्रमाण है कि यदि इरादा पक्का हो, नियत साफ हो, आचरण में ईमानदारी हो तो कोई भी देश अपने पैरों पर शीघ्र खड़ा हो सकता है।

फिर देख ख़ुदा क्या करता है

मौलाना ज़फर अली ख़ाँ

अल्लाह का जो दम भरता है – वह गिरने पर भी उभरता है
जब आदमी हिम्मत करता है – हर बिगड़ा काम संवरता है
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

ओ मुस्लिम क्यों दिलगीर है तू – क्यों गम की बना तस्वीर है तू
अगयार हैं खाक इक्सीर है तू – तदबीर हैं वह तक़दीर है तू
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

है रहनुमा क़ुरआन तेरा – इस्लाम पे है ईमान तेरा
पैगम्बर है जीशान तेरा – दिल जिसपे हुआ कुरबान तेरा
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

तू हामि–ए–शरए–पयम्बर है – तू माहि–ए–शेव–ए–आज़र है
तू गैरते ख़ालिक़े अकबर है – तू बरशे तेगे हैदर है
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

बिखरी हुई कुव्वत तेरी है – सिमटी हुई हिम्मत तेरी है
वरना यह हुकूमत तेरी है – आलम की ख़िलाफ़त तेरी है
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

तू इल्म की दौलत लाया है – तहज़ीब सिखाने आया है
तू जब से जहां पर छाया है – दुनिया की पलट गयी काया है
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

गुलशन में बहार है आयी हुई – गरदूं पे घटा है छाई हुई
फिरती है सबा इठलाई हुई – तक़दीर है पलटा खाई हुई
उठ बाँध कमर क्या डरता है
फिर देख ख़ुदा क्या करता है

❖❖❖

बेगम हज़रत महल

अवध की जाँबाज़ मुस्लिम ख़ातून

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी में अवध की जाँबाज़ मुस्लिम ख़ातून इफ़्तेख़ारुन्निसा उर्फ़ बेगम हज़रत महल का नाम सुनहरे अक्षरो में लिखा जाता है। 1857ई. की जंगे आज़ादी में हज़रत महल ने वह किरदार अदा किया जिसका कोई सानी नहीं मिलता। यह वह ख़ातून हैं कि जिन्होंने इन्तेहाई जुरअत और बहादुरी के साथ अंग्रेज़ों का मुक़ाबला किया। जिनका सियासी तदब्बुर, बसीरत और अज़्म व हौसला बेहद पुख़्ता और मुस्तहकम था। उन्होंने सिन्फ़े नाज़ुक होने के बावजूद भी ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लिया और अंग्रेज़ी हुकूमत की पॉलीसी ''बांटों और राज करो'' की मुख़ालिफ़त करते हुए हिन्दुओं और मुसलमानों में इत्तेहाद पैदा करके हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी 1857 ई0 को एक नया मोड़ दिया। हालांकि वह पूरी तरह कामयाब तो न हो सकीं मगर उस माहौल में उनकी बहादुरी और हुकूमती सूझबूझ तारीख़ी और बेमिसाल है। उनके मुक़ाबिल अंग्रेज़ों के बड़े–बड़े सियासी दिमाग़ और ज़ेहन लगे हुए थे। जिनमें ख़ासतौर पर लॉर्ड डलहौज़ी का नाम आता है जो उन्नीस्वीं सदी के अंग्रेज़ों के नामवर सियासतदानों में शुमार किया जाता है जिसने उस वक़्त के सभी हिन्दुस्तानी सियासत दानों को शिकस्त दे दी थी।

उस वक़्त की बग़ावत से मुताल्लिक़ अख़बार 'दि टाइम्स' के रिपोर्टर व्योम हार्वड रसेल ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि तीन माह के मुहासरे के दौरान तीन हज़ार ब्रिटिश बाशिन्दों में आधे या तो फ़रार होने में कामयाब हो गये या मारे गये। बेग़म हज़रत महल ने हैरत अंगेज़ ताक़त और क़ाबिलियत का मुज़ाहरा करते हुए पूरे अवध को इस जंग के लिए तैयार कर लिया था।

जब भी बेगम के घर पर मीटिंग होती थी, उनके तमाम क़रीबी अरकान और कमाण्डर उसमें शामिल होते थे। तारा कोठी में हफ़्ते में दो–तीन बार ऐसी मुलाक़ातें होती थीं जिनमें लोगों से अपने दीन और मुल्क को बचाने के लिए लड़ने की दरख़्वास्त की जाती थी। और ब्रिटिश राज की भी सख़्त अलफ़ाज़ में मज़म्मत की जाती थी।

हज़रत महल अंग्रेज़ों की चालाकी और मक्कारी को बहुत अच्छी तरह समझती थीं, वह एक दूरअन्देश औरत थीं। अंग्रेज़ों से मुक़ाबला करने के लिए उन्होंने अपनी सलाहियतों का भरपूर इस्तेमाल किया। इस लड़ाई में न सिर्फ़ उन्होंने मन्सूबाबन्दी की बल्कि लड़ाई से मुताल्लिक़ तमाम अहकामात उनके दरबार से ही दिये जाते थे। उन्होंने आज़ादी के मतवालों के हौसले बुलन्द करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

1856ई0 में जब अंग्रेज़ हुकूमत ने उनके शौहर वाजिद अली शाह को जिलावतन करके कलकत्ता भेज दिया तब हज़रत महल ने अवध की बागडोर संभाल ली और वह एक नये रंग में सबके सामने आईं। उनका यह रुख़ सिर्फ़ अपने वतन के लिए था जिसका मक़सद मुल्क से अंग्रेज़ों को बाहर फेंकना था। यह चिंगारी हर एक आज़ादी के मतवाले के दिल में जल रही थी लेकिन इसे पूरी तरह भड़काने और एक जुनूनी कैफ़ियत में बदलने में जो किरदार बेगम हज़रत महल ने अदा किया वह

बेमिसाल है।

1857 ई0 की बग़ावत की चिंगारियाँ तो मुल्क के कोने–कोने में फूट रही थीं लेकिन उनको आग में बदलने का काम बेगम हज़रत महल ने किया। बेगम हज़रत महल लखनऊ के अलग–अलग इलाक़ों में घूम–घूम कर मुस्तक़िल इन्क़िलाबियों और अपनी फ़ौज की हौसला अफ़ज़ाई करती रहीं और इस काम में उन्होंने दिन–रात एक कर दिये। एक औरत की यह हिम्मत और हौसला देख कर फ़ौज और इन्क़िलाबियों का जोश बढ़ता ही गया। उन्होंने अवाम के साथ–साथ आस–पास के ज़मीनदारों को भी अपने साथ इस जंग में शामिल करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य का डट कर मुक़ाबला किया।

देहली में बहादुर शाह ज़फ़र के क़ैद होते ही बाग़ियों के हौसले थोड़े कमज़ोर होने लगे और देहली के साथ–साथ लखनऊ भी ब्रिटिश साम्राज्य के क़ब्ज़े में जाने लगा था। जब अंग्रेज़ फ़ौजें लखनऊ पहुँचने लगीं तो बेगम हज़रत महल ने लखनऊ के क़ैसरबाग़ के दरवाज़ों पर ताले लगवा दिये और अपने फ़ौजियों से जोश भरे अन्दाज़ में यह जुमला कहा कि ''अब सब कुछ क़ुर्बान करने का वक़्त आ गया है''। उनकी आवाज़ पर अवाम और उनके फ़ौजी अपने वतन की ज़मीन के लिए मर–मिटने पर तैयार थे। यहाँ तक कि उनके एक इशारे पर अपनी जान तक क़ुर्बान करने का शौक़ उनकी अवाम में था। लोगों ने कभी यह नहीं समझा कि वह एक औरत की कमान में यह जंग कर रहे हैं। उन्हें बेगम हज़रत महल पर भरपूर ऐतमाद था और इस ऐतमाद को बेगम ने कभी टूटने भी नहीं दिया।

जब लखनऊ के रेज़ीडेंसी में अंग्रेज़ों के ख़ानदान इन्क़िलाबियों के मुहासरे में थे तो हज़रत महल के एक सरदार ने हज़रत महल से कहा कि ''आप ब्रिटिश क़ैदियों को मेरे हवाले कर दें, मैं उनमें से एक–एक के हाथ–पैर काट कर अंग्रेज़ों की छावनी में भेजूँगा'' लेकिन हज़रत महल ने खुले तौर पर इस से इनकार कर दिया और कहा कि ''हम क़ैदियों के साथ इस तरह का सुलूक हरगिज़ न तो ख़ुद करेंगे और न ही किसी को करने की इजाज़त देंगे। क़ैदियों के साथ इस तरह का मामला करना हमारी इस्लामी रिवायात के ख़िलाफ़ है, उनकी औरतों और बच्चों पर क़तई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।''

इस बात से बख़ूबी यह अन्दाज़ा होता है कि बेगम हज़रत महल कितनी इंसाफ़ पसन्द और हुस्ने सुलूक का मामला करने वाली औरत थीं। जिन्होंने हालात और मुश्किल घड़ी में हौसले और हिम्मत के साथ अपने फ़रायज़ को बख़ूबी अंजाम दिया और बेमिसाल क़ुर्बानी पेश की।

हज़रत महल का कहना था कि ''यह हिन्द की पाक व साफ़ सरज़मीन है। यहाँ जब भी कोई जंग भड़की है हमेशा ज़ुल्म करने वाले ज़ालिम की शिकस्त हुई है। यह मेरा पुख़्ता यक़ीन है। बेकसों, मज़लूमों का ख़ून बहाने वाला यहाँ कभी अपने गन्दे ख़्वाबों के महल नहीं खड़ा कर सकेगा और आने वाला वक़्त मेरे इस यक़ीन की ताईद करेगा।''

बेग़म हज़रत महल ने यह भी साबित कर दिया कि औरत घर के अन्दर के मामलात ही बख़ूबी नहीं निभाती बल्कि वक़्त पड़ने पर वह अपने जौहर दिखा कर दुश्मनों की सफ़ों में ज़लज़ला पैदा करने की ताक़त भी रखती है।

बेग़म हज़रत महल ने आख़िरी दम तक हिम्मत नहीं हारी। वह क़ैसरबाग़ में ठहरीं। इससे पहले कि ब्रिटिश साम्राज्य उनके महल में दाख़िल होते,

वह 15 मार्च 1858 ई0 को अपने कुछ हामियों के साथ लखनऊ से रवाना हो गईं।

उन्होंने लखनऊ के बाहर भी मूसा बाग़ में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ दूसरा महाज़ खोला। बेगम हज़रत महल ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आख़िरी जंग 21 मार्च 1858 ई0 को मौलाना अहमदुल्लाह शाह के साथ मूसा बाग़ में लड़ी लेकिन इस जंग में अंग्रेज उन पर ग़ालिब आ गये।

बेगम हज़रत महल अपने बेटे ब्रिजीस क़दर और बाक़ी हामियों के साथ नैपाल की सरहद की तरफ़ चली गईं। उन्होनें घाघरा नदी को पार किया और ज़िला बहराईच में बोंदी क़िले को अपनी छावनी बना लिया।

लखनऊ छोड़ने के बाद भी बेगम के साथ 15000 से 16000 सिपाही थे। वह सब के सब जंगी हथियारों से लैस थे। उन्होंने इतनी दूर से भी अवध का नज़्म व नस्क़ चलाने की कोशिश नहीं छोड़ी।

लेकिन आख़िर में जब तमाम उम्मीदें ख़त्म होने लगीं और ऐसा महसूस हुआ कि अंग्रेज़ उन पर मुकम्मल कंट्रोल हासिल कर लेंगे तो बेग़म ने नैपाल में पनाह लेने का फ़ैसला किया। फिर बेगम हज़रत महल ने अपनी बक़िया सारी ज़िन्दगी नैपाल में ही गुज़ार दी।

जब ब्रिटिश फ़ौज ने लखनऊ पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया और उनके सारे हुक़ूक़ छीन लिये गये तो उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत की तरफ़ से दी गई किसी भी तरह की रिआयत यहाँ तक कि अग्रेज़ों की तरफ़ से उनकी जिलावतनी की हालत में एक ख़ास पेंशन दिये जाने की पेशकश को भी ठुकरा दिया। इस से हज़रत महल की ख़ुद्दारी का भी पता चलता है। वह सिर्फ़ एक बेहतरीन मन्सूबा साज़ नहीं थीं बल्कि जंग के मैदान में भी उन्होंने ख़ूब जौहर दिखाए। जब उनकी फ़ौज हार गई तो उन्होंने दूसरी जगहों पर फ़ौज को तैयार किया। बेगम हज़रत महल का अपने मुल्क के लिए ख़िदमत करना कोई नया कारनामा नहीं था लेकिन एक औरत होकर उन्होंने जिस जुरअत और हिम्मत के साथ अंग्रेज़ों से टक्कर ली वह बेमिसाल है। हज़रत महल के कारनामे इस बात की निशानदेही करते हैं कि औरत मज़लूम व मजबूर नहीं होती बल्कि वह वक़्त पड़ने पर मर्दों के साथ क़दम से क़दम मिला कर आगे बढ़ सकती है और किसी भी तरह की ज़िम्मेदारी को अच्छे तौर पर निभा सकती है बस उसे अपनी सलाहियतों को पहचान कर उन्हें सामने लाने की ज़रूरत है।

वह 1857 ई0 की एक अकेली ऐसी रहनुमा थीं जिन पर अंग्रेज़ कभी क़ब्ज़ा नहीं कर सके। बेगम हज़रत महल 1879 ई0 तक हयात रहीं। लेकिन आख़िर तक उन्होंने अंग्रेज़ों के सामने घुटने नहीं टेके और 20 साल की जिला वतनी और अपनी मौत 1879 ई0 तक लगातार ब्रिटिश हुकूमत की मुख़ालिफ़त करती रहीं।

बेगम हज़रत महल की वफ़ात 1879 ई0 में काठमांडू में हुई और वहीं की जामा मस्जिद के क़ब्रिस्तान में उन्हें सुपुर्दे ख़ाक किया गया। 15 अगस्त 1962 ई0 को उत्तर प्रदेश की सूबाई सरकार ने लखनऊ के विक्टोरिया पार्क में उनकी याद में संगे मरमर का मक़बरा बनवाया और इस पार्क को ''बेग़म हज़रत महल पार्क'' का नाम दिया।

बेशक इस तरह की बहादुर, जुरअतमन्द, आज़ादी की मतवाली ख़ातून किसी और मुल्क या क़ौम में पैदा हुई होती तो उस पर तहक़ीक़ व तारीख़ की सैकड़ों अहम किताबें सामने आई होतीं मगर अफ़सोस कि हमें तारीख़ में बेगम हज़रत महल पर बहुत ही कम मवाद मिलता है।।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: क्या हज़रत ईसा अलै0 जीवित आसमानों पर हैं?

उत्तर: हाँ हम मुसलमानों का मानना है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित अपने शरीर के साथ आसमानों पर उठा लिये गये हैं, कुर्आन मजीद की सूरः निसा की आयत 157, 158 से यही स्पष्ट होता है अल्लाह तआला ने बताया कि ''उनको उन लोगों ने कत्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी तरफ उठा लिया'' यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुअ़जिज़ा था जो अल्लाह तआला ने दिखाया, जिस शख्स को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का कर दिया था उसको सलीब पर चढ़ा दिया गया वह बराबर कहता रहा कि मैं ईसा नहीं हूँ मगर वह सलीब पर चढ़ा कर मार दिया गया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चौथे आसमान पर जीवित सुरक्षित है।

प्रश्न: क्या हज़रत ईसा अलै0 फिर दुन्या में आएंगे?

उत्तर: हाँ इसका भी इशारा सूरः निसा की आयत 159 में मिलता है कि वह इस दुन्या में फिर आएंगे और उस वक़्त के तमाम मसीही उन पर ईमान लाएंगे, और आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे रिवायत में भी मिलता है कि जब उपद्रवी दज्जाल निकलेगा और वह खुद खुदाई दावा करेगा उस वक्त उसका मुकाबला कोई न कर सकेगा, अल्लाह तआला ने उसका क़त्ल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों लिख रखा है वह दमिश्क़ की मस्जिद के पूर्वी मनारे के द्वारा उतारे जाएंगे फिर वह हज़रत मेंहदी के साथ मिल कर दज्जाल से लड़ेंगे और उसको क़त्ल कर देंगे।।

प्रश्न: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात कोई नबी न आएगा जब कि ईसा अलैहिस्सलाम आएंगे इसका क्या उत्तर है?

उत्तर: हज़रत ईसा अलै0 आखिर ज़माने में जो आऐंगे तो बेशक वह नबी होंगे मगर वह तो पहले से नबी हैं आखिरी नबी के पश्चात उनको नुबूवत नहीं मिली है, फिर वह जब आख़िर ज़माने में आएंगे तो वह आखिरी नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे और जो ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाऐंगे उनको वह आखिरी नबी की शरीअ़त पर चलाएंगे इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आख़िर ज़माने में आना हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन ''मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा'' के खिलाफ नहीं है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस दुन्या में दोबारा उतारे जाने के पश्चात चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस वर्ष जीवित रहेंगे फिर उनका देहान्त हो जाएगा, रिवायत में चालीस के बाद समय का कोई चिन्ह नहीं लिखा है इसलिए उलमा ने कहा कि चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस वर्ष भी हो सकते हैं।

प्रश्न: क्या यह सही है कि किसी मुसलमान की वफ़ात जुमे को हो या रमजान में हो तो उस पर कब्र का अ़ज़ाब नहीं होता है?

उत्तर: हाँ बाज रिवायतों से यह बात मालूम होती है कि ईमान वाला जुमे को या रमजान में वफात पाये तो उस पर कब्र का

❖❖❖

इस्लाम तेरा सब को नज़र आना चाहिये

(बद–एख़्लाकी का शिकार हमारे एक दोस्त ने अपना एक वाकेआ सुनाया)

शमीम एक़बाल खाँ

"एक दिन शाम को मोबाइल की घन्टी बजी, मोबाइल की स्क्रीन देखी तो वहाँ सिर्फ मोबाइल नम्बर था, किसी जानने वाले का नाम नहीं था, मैंने हेलो कहा, दूसरी तहफ से आवाज़ आई, मैं भी आपके शहर का रहने वाला हूँ, मैं रिटायर्ड इन्जीनियर हूँ, और आपसे मिलने की ख़्वाहिश रखता हूँ, कभी आप तशरीफ़ लायें बड़ी खुशी होगी. अपना मकान नम्बर और लैण्ड मार्क बता कर तकरीबन बीस मिनट बात करते रहे, एक बार फिर मिलने की बात कह कर सिलसिला खत्म हो गया।

दूसरे दिन शाम को मैं उनके घर पहुंच कर काल–बेल दबाई, अन्दर से पूछा गया कौन है, मैं ने अपना नाम बताया. चन्द लम्हों के बाद गेट खुला और वह साहब दुबले पतले से कुर्ता पायजामा में मलबूस सवालिया निशान बने मेरे सामने खड़े थे, जी! फ़रमायें, आप कौन? मैंने अपना नाम दुबारा बताया और याद दिलाया कि आप ने कल मुझे काल किया था।

उन्हें याद आ गया और माज़रत करते हुये कहा कि माफ़ कीजियेगा, मुझे अभी किसी काम से निकलना है, फिर किसी दिन तशरीफ़ लायें, यह कहते हुये वह साहब अन्दर चले गये मैं ठगा सा खड़ा रह गया और शर्मिन्दगी को लेकर वापस हो लिया।"

एक सेवानिवृत अधिकारी के एख़्लाक़ का एक नमूना यह है। इस्लाम में एख़्लाक़ पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। यह कहा गया है कि 'तुम में अच्छे लोग वह हैं जिनके एख़्लाक़ अच्छे हों, यानी किसी के एख़्लाक का अच्छा होना इबादत का दर्जा रखता है।

चूँकि आम मुसलमानों में तालीम की कमी है इसकी वजह से बहुत सी ख़राबियॉ खुद–ब–खुद पैदा हो गई हैं. सब से बड़ी बात तो यही है कि दीन की समझ नहीं है, जुमा और ईदैन की नमाज़ पढ़ लेने को ही दीन समझा जाने लगा है, झूठ बोलना, कम तौलना, वादा–ख़िलाफ़ी करना, पड़ोसी से बात न करना उन्हें परेशान करना वग़ैरह इस्लाम की अहम बातें तो हैं लेकिन होता यह है कि अपने फ़ायदे के लिये इन अहम बातों को साइड में कर दिया जाता है, जबकि साइड पर रखी जाने वाली यही बातें हमारी कामयाबी का ज़रिया बन सकती है, यह कामयाबी सिर्फ़ एक व्यक्ति की कामयाबी नहीं बल्कि पूरी मिल्लत को कामयाब बना सकती है।

यह बात काबिल–ए–फ़ख्र है कि मुसलमान आज के नफ़रत के माहौल में सब्र करता है, बद से बद सूरत–ए–हाल पैदा हो जाने के बावजूद भी वह आपे से बाहर नहीं हो रहा है, यह ईमान का अहम पहलू है अल्लाह भी फ़रमाता है कि "हम सब्र करने वालों के साथ हैं"। अगर हम सब्र के साथ कुछ और भी ईमान की बातें शामिल कर लें तो बड़ी कामयाबी हाथ लग सकती है, ईमानदारी की बातें अभी भी देखी जाती हैं।

मेरे दोस्त डाक्टर उबैद उल्लाह चौधरी जो उर्दू साहित्य की एक पहचान हैं अपने एक साथी महमूद बलरामपूरी साहब के साथ तशरीफ़ लाये और अचानक ही उनको एहसास

हुआ कि उनका बैग टैम्पो में ही रह गया है, यह लोग बदहवास हो कर गली के मोड़ तक भाग कर गये, जहाँ पर टैम्पो छोड़ा था लेकिन टैम्पो अब वहाँ कहाँ? दो—चार लोगों से टैम्पो के बारे में पूछ—ताछ भी की वहाॅ लोगों को मालूम भी हो गया कि मामला बैग का टैम्पों में छूट जाने का है।

महमूद साहब ने यह शक ज़ाहिर किया कि उर्दू एकादमी में उन्होने मशीन से पानी पिया था मेरे ख़याल से बैग वहीं रह गया है, मैं उन दोनों को कार से एकादमी के आफ़िस गोमती नगर ले गया, जहाॅ शक ज़ाहिर कर रहे थे वहाॅ देखा गया, बैग वहाॅ पर नहीं था, कई लोगों से पूछ—ताछ की गई लेकिन कुछ पता नहीं चला. कैमरे के फूटेज खंगाले गये तो पता चला कि जब वह आफ़िस से बाहर निकले हैं तो उनके हाथ में बैग था, अब यह कनफ़र्म हो गया कि बैग टैम्पो में ही छूटा है।

हम लोग घर लौट आये, सभी भूखे थे, खाना खाया गया, चाय पी गई लेकिन बातें बैग और टैम्पो की होती रहीं, चौधरी साहब बहुत परेशान थे बैग में अहम काग़ज़ात, रूपये वगैरह भी थे, मैंने उनको तसल्ली देते हुये कहा कि अगर आप की क़िस्मत में है तो वह कहीं जा नहीं सकता है और आप की किस्मत से उतर गया है तो कोई मिला नहीं सकता है, महमूद बलरामपूरी ने कहा कि ड्राइवर मुसलमान था और अगर ईमान वाला होगा तो बैग जब देखेगा तो पहुंचा देगा बशर्ते किसी अन्य सवारी के हाथ न लगे।

चलते वक्त चौधरी साहब ने हमारे पोतों को आवाज़ दी, उनके आने पर जेब से कुछ रूपये निकाल कर ईदी के नाम पर उन्हें दिया और रुख़सती मुसाफ़े के लिये हाथ बढ़ाया, मैं ने कहा चलिये आप लोगों को मैट्रो—स्टेशन तक गाड़ी से छोड़ आता हूँ लेकिन वह इस पर राज़ी नहीं हुये और हंसते हुये यह कह कर चले गये कि टैम्पो से चला जाऊँगा क्योंकि अब टैम्पो पर कुछ छूटने का डर तो है नहीं, मैं खुदा हाफ़िज़ कह कर अन्दर आ गया थोड़ी ही देर में घन्टी बजी मैं बाहर निकला तो देखा जो लोग दुखी मन से रुख़सत हुये थे, हंसते हुये खड़े हैं, बताया कि जैसे ही हम गली के मोड़ पर पहुंचे एक साहब ने बताया कि आप जिस बैग को तलाश कर रहे थे, वह दूकान के काउन्टर पर रखा है, चौधरी साहब के पूछने पर उन साहब ने बताया कि एक टैम्पो वाला आया था, इसी दूकान के सामने आप लोग उतरे थे लिहाज़ा उसी दूकान के काउन्टर पर बैग रख दिया था और दूकान के मालिक से कहा कि अगर कोई बैग पूछने आये तो उसे दे देना। चौधरी साहब ने बैग खोल कर देखा, हर चीज़ अपनी जगह पर मौजूद थी, टैम्पा वाले ने बैग खोल कर भी नहीं देखा, हम सब का ईमान और एख़लाक इसी तरह होना चाहिये तभी हम और हमारी क़ौम बिरादरान—ए—वतन के लिये मोहतरम बन सकेंगे। अभी कुछ दहायी पहले तक मुसलमान को सच्चा माना जाता था, बिरादरान—ए—वतन ही कहते थे कि 'मुसलमान झूठ नहीं बोल सकता' लेकिन अब सारे ऐब मुसलमानों में बताये जा रहे हैं, ऐसा क्यों?।

वह इसलिये कि हमने क़ुर्आन को क़रीने से बांध कर अल्मारी में रख दिया है या बड़े अक़ीदत के साथ मसाजिद में रखा दिया है तो ऐसी हालत में हमको न तो बरकत मिल सकती है और न ही हिदायत मिल सकती है जबकि क़ुरआन चाहता है कि उसको समझ कर पढ़ें और बेहतर इन्सान बनें, अल्लाह हमें समझ कर अमल करने वाला बनाये। आमीन!

❖❖❖

स्वतंत्रता दिवस पर स्वयं से करें ये वादे

सै0 इरफ़ान हबीब

हर साल की तरह इस साल भी हम 79वाँ स्वतंत्रता दिवस कुछ न कुछ उम्मीद लेकर मना रहे हैं जिस तरह इस दिन को हम मनाते आये हैं। उम्मीद यही होती है कि भारत का जो विकास है, वह आर्थिक विकास तक ही सीमित न रहे बल्कि देश के लोगों के सामने और जो मुद्दे है शिक्षा, भाईचारा, शांति, इन्हें लेकर हम कैसे काम करें और हमारा क्या कमिटमेंट हो?

आजादी से जुड़ी यह जो तारीख है, हमें चाहिए कि हम कमिटमेंट को सिर्फ इसी दिन के लिए ना रखें। ऐसा न हो कि एक दिन आप कमिट करें, उसके बाद कल से फिर जिंदगी पुराने ढर्रे पर लौट आए। भूलना इंसानी आदत है, इसलिए अक्सर वक्त गुजरने के साथ हमारी स्पिरिट कहीं न कहीं कमजोर पड़ जाती है। होना तो यह चाहिए कि यह स्पिरिट पूरे साल हमारे दिल में बनी रहे। तभी बदलाव हो सकते हैं।

भारत को आजाद हुए सात दशक से अधिक वक्त हो गया। मुझे लगता है कि इस दौरान हमारा प्रदर्शन अच्छा रहा है। बहुत सी चीजें हासिल की हैं देश ने। राजनीति अपनी जगह है। मैं नहीं कह रहा हूं कि पिछले 10 साल में सब कुछ खराब हुआ। उससे पहले भी बहुत सारी चीजें थी, जो नहीं हुई, जबकि वे होनी चाहिए थीं। मसलन, एजुकेशन पर खर्च है। वह काफी समय से कम रहा है और कम हो रहा है। ये चीजे नहीं होनी चाहिए। 15 अगस्त के दिन कम से कम हम खुद से वादा करें कि जो आने वाला भारत है, वह आज के भारत से बेहतर होगा।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आजादी हमें किन लोगों के जरिए मिली, किनके श्रम से मिली, किन लोगों ने इसके लिए त्याग किया। हम आजादी के आन्दोलन को याद तो करते हैं, लेकिन यह नहीं सोचते कि जिन लोगों ने अपना जीवन देश के लिए कुर्बान कर दिया, उनके क्या सपने थे? उनके लिए हम आज कैसा भारत बनाना चाहते हैं? सपनों का जो स्वरूप हमें उन लोगों ने दिया था, क्या हम उससे और उनकी विरासत से दूर हुए है? अगर हुए हैं तो फिर सोचना होगा कि इसे कैसे ठीक किया जाए।

मैं यह नहीं कह रहा हूं कि 70–75 साल पुरानी सोच का सब कुछ प्रासंगिक है। बहुत सी चीजें 2024 में नहीं हो सकती। मगर बहुत सी चीजे अच्छी हैं, टाइमलेस है, उन्हें समय के आधार पर नहीं बदला जा सकता, क्योंकि वे हमेशा आपके साथ रहने वाली हैं। हमारे लिए जो भावना भगत सिंह ने छोड़ी, शहीद अशफ़ाकुल्लाह ने छोड़ी, गाँधी ने छोड़ी, जो नेहरू और पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने छोड़ी, हम सोच कर देखें कि हम उन सब सिद्धांतों के, उन मूल्यों के कितने नज़दीक है और कितने दूर हैं। अगर हम उन सब अच्छी बातों से दूर हैं तो हम उनके नज़दीक कैसे जा सकते हैं?

अब राष्ट्रवाद को देख लीजिए। राष्ट्रवाद की परिभाषा को हमने कैसे बदला? हम आपस में प्यार मोहब्बत, मिलजुल कर रहने की बात करते थे। एक समरसता की बात थी, जो हमारे आजादी के आंदोलन में, हमारे नेताओं ने दी। उस भावना से हम कितना दूर हुए? अगर दूर हुए तो क्यों हुए? उसके पास अगर हमें जाना है तो भविष्य का भारत प्यार–मोहब्बत और प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर हमें बनाना है। प्रगति सिर्फ आर्थिक नहीं होनी चाहिए, वैचारिक प्रगति भी बहुत ज़रूरी चीज़ है।

आजकल बहुत से लोग

बात करते हैं वैज्ञानिक सोच की। वैज्ञानिक सोच सिर्फ वैज्ञानिकों के लिए नहीं है। यह उन लोगों के लिए भी है जो घर परिवार चलाते हैं। उन्हें भी वैज्ञानिक सोच की जरूरत है क्योंकि हममें से हर किसी को हर तरह के अंधविश्वास से दूर होना है। बात जब भविष्य के भारत की हो तो उसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और सोच के विकास का भाव भी शामिल होना चाहिए। 15 अगस्त के लिए हमारा कम से कम इतना कमिटमेंट तो होना ही चाहिए।

भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस जैसे लोगों का आह्वान था कि अमीरी–गरीबी की खाई कम हो। हम उन सबकी बातें करते हैं लेकिन यह नहीं देखते कि वे लोग जो कह गए थे, क्या हमने उस दिशा में कदम बढ़ाए? यह अफसोस की बात है कि कुछ अमीर लोग और ज्यादा अमीर हुए है जबकि बहुत से गरीब और गरीब। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारे पुरखों ने इसके लिए कुर्बानियां नहीं दी थीं।

(लेखक राजनीतिक इतिहासकार हैं)

❖❖❖

पृष्ठ ..11...का शेष

पढ़ा था ताकि आलिम व कारी कहा जाए, लिहाजा (तेरा ये मकसद हासिल हो चुका और दुनिया में) तेरे आलिम व आबिद और कारी होने का खूब चर्चा हो चुका, वो भी औंधे मुंह जहन्नम में घसीट कर डाल दिया जाएगा, और उसी के साथ एक तीसरा शख्स भी होगा जिसको अल्लाह तआला ने दुनिया में भरपूर दौलत दी होगी, और हर तरह का माल उसको अता फरमाया होगा, वो भी खुदा के सामने पेश किया जागा, अल्लाह तआला उसको भी अपनी नेमतें बतलाएगा, (कि मैंने तुझे ये नेमतें दी थीं) वो सब का इकरार करेगा फिर अल्लाह तआला उससे पूछेगा तूने मेरी इन नेमतों से क्या काम लिया ? (और किन मकसद केलिए इस्तेमाल किया) वो कहेगा ऐ खुदा ! जिस जिस रास्ते में और जिन जिन कामों में खर्च करना तुझे पसंद है मैंने तेरा दिया हुआ माल उन सब ही में खर्च किया, अल्लाह तआला फरमाएगा तूने झूट कहा, हकीकत में ये सब कुछ तूने इसलिए किया था कि दुनिया में दानी मशहूर हो (और तेरे दान और मदद के चर्चे हों) लिहाजा (तेरा ये मकसद तूझे हासिल हो गया और दुनिया में) तेरे दान पुन्न के खूब चर्चे हुए, फिर अल्लाह तआला कि तरफ से उसके लिए भी हुक्म होगा और वो भी औंधे मुंह घसीट के जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

(मुस्लिमः 5032)

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ के भूतपूर्व मोहतमिम मौलाना मुहिबुल्लाह लारी नदवी रह0 के बड़े बेटे मौलाना इश्तियाक़ अहमद लारी नदवी का 4 जुलाई, 2025 ई0 को लखनऊ में देहान्त हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''। मरहूम बड़े नेक, इबादत गुज़ार, मेहनती और संयमी इन्सान थे।

दूसरे दिन ''तकया तारनशाह'' खदरा, लखनऊ के क़ब्रिस्तान में हज़ारों के मजमें में मरहूम को सुपुद्र ख़ाक किया गया, मरहूम ने अपने पीछे सात बेटे और एक बेटी छोड़ी, माशाअल्लाह सब शादी शुदा हैं।

हम ''सच्चा राही'' के समस्त पाठकों से दुआ–ए–मग़फ़िरत की अपील करते हैं। अल्लाह उनको जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए। आमीन। ◆◆

वहम का नतीजा

मायल ख़ैराबादी

अल्लाह रखे गाँव का रहने वाला था, था भी गंवार। नया नया हमारे मदरसे में दाखिल हुआ था। और हमारे साथ ही बोरडिंग हाऊस में रहता था दस बीस ही दिन में हम जान गये कि अल्लाह रखे बड़ा वहमी लड़का है वह कोई काम करने चलता और कहीं से छींक की आवाज आ जाती तो बस रुक जाता कहीं जाता और रास्ते में कोई काना आदमी मिल जाता, तेली को देख लेता या लोमड़ी रास्ता काटकर निकल जाती तो बस लौट आता, उसकी बायीं आँख फड़कती तो कहता कोई न कोई दुख की बात जरूर होगी फिर वह न जाने क्या क्या सोचता, कहता इन बातों को अल्लाह रखे मनहूस कहा करता था।

हमने उसे बहुत समझाया कि यह सब वहम है, तुम क्यों यह ढकोसले मानते हो। अगर इसी तरह हर बात को मनहूस समझोगे तो कुछ न कर सकोगे। तुम मुसलमान हो मुसलमान तो ऐसी बातों को मनहूस नहीं समझता अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु वसल्लम ने वहम करने से रोका है।

हम सब इसी तरह समझाते मगर अल्लाह रखे की समझ में कुछ न आता। आखिर सब साथियों ने दिल में ठान लिया कि अल्लाह रखे की यह बात दूर ज़रूर करेंगे। एक दिन अल्लाह रखे बाजार गया हुआ था बाजार से वह देर में आया। इतनी देर में हम सबने आपस में मशवरा कर लिया और एक तरकीब सोच ली और दिल ही दिल में हंसते हुए उठे और अपने अपने काम से लग गये।

दूसरे दिन हम सब खाना खाने बैठे बोरडिंग में हम सब एक साथ खाना खाते थे तो भाई बिस्मिल्लाह हुई और हम खाने लगे। अल्लाह रखे ने भी रोटी ली। निवाला बनाया, मुँह में रखना चाहता था कि एक तरफ से सईद ने छींका। अल्लाह रखे छींक की आवाज सुनते ही रुक गया हम सब खाते रहे। चन्द मिनट के बाद उसने फिर खाना चाहा कि दूसरी तरफ से मुमताज ने छींक मारी। अल्लाह रखे फिर रुक गया। हम सब खाते रहे। थोड़ी देर के बाद अल्लाह रखे ने फिर चाहा कि खाये कि फिर तीसरी तरफ से ''आ छीं'' अल्लाह रखे फिर चुप बैठ गया उसके बाद यह हालत हुई कि जब वह खाने की तरफ हाथ बढ़ाता ''आ छीं, आ छीं'' किसी न किसी तरफ से ज़रूर आती नतीजा यह हुआ कि हम सबने चटपटी चटनी तक खत्म कर दी। गोश्त की उम्दा उम्दा बोटियाँ सब खा डाली, कबाब भी खत्म कर डाले। खाली शोरबा और कुछ रोटी के टुकड़े छोड़े उठ उठ कर पानी पिया। अपना अपना बस्ता लिया और मदरसे चल दिये।

अल्लाह रखे ने बचा खुचा खाना खाया। फिर वह भी मदरसे को रवाना हुआ, जैसे ही बोरडिंग से निकला एक काने आदमी ने उसे सलाम किया ''बाबू भैया! अस्सलामो अलैकुम'' अल्लाह रखे ने जो काने को देखा तो लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्ला पढ़ता हुआ वापस हो गया। दस पन्द्रह मिनट के बाद फिर बोर्डिंग से निकला इधर उधर देखा काना आदमी जा चुका था, अल्लाह रखे आगे बढ़ा। सड़क पर पहुंचा एक तेली तेल का मटका सिर पर रखे दिखाई दिया अल्लाह रखे ने आँखे बन्द कर लीं और मुँह फेर कर बैठ गया पन्द्रह मिनट बैठा रहा। उसके बाद फिर चला एक गली से गुज़र रहा था कि उसने देखा कि एक आदमी लम्बी सी चादर ओढ़े खड़ा है उस आदमी ने अपनी बगल से एक लोमड़ी का बच्चा निकाला और गली में छोड़ दिया और खुद एक तरफ भाग गया ''तौबा'' अल्लाह रखे के मुँह से निकला और दूसरी तरफ मुड़ गया।

इस तरह वह करीब क़रीब डेढ़ घण्टा देर से मदरसे पहुँचा, वहाँ हम सब पहुँच चुके थे मास्टर साहब से सारा हाल कह चुके थे। अल्लाह रखे जो देर में आया तो मास्टर साहब ने उसे कई छड़ियाँ मारीं और जुर्माना भी किया।

शाम को जब हम वापस हुए तो अल्लाह रखे से पूछा, ''भाई क्यों देर हो गई थी?'' उसने बताया ''आज रास्ते भर नहूसत रही। हमने कहा ''फिर तुमने इन बातों

को क्यों माना?'' उसने जवाब दिया ''मानता क्यों नहीं देखो न नहूसत नहीं तो क्या थी मार भी खाई जुर्माना भी हुआ।'' हम सबने फिर समझाया ''अरे बेवकूफ! हमने भी तो छीकें सुनी थीं काना आदमी और तेली भी तो मिला था। ''हमारा तो कुछ भी नहीं बिगड़ा।''

हमारी इस बात से अल्लाह रखे सोच में पड़ गया कि अचानक उसकी आँख फड़कने लगी। उसने कहा ''देखो फिर कोई मुसीबत आने वाली है।''

अहमद उल्लाह उसके पास बैठा था, उसने कहा ''अच्छा तुम्हारी आँख फड़कना मैं बन्द किये देता हूँ।'' यह कह कर उसने एक तिनका उठाया और उसकी आँख के पपोटे पर चिपका दिया आँख फड़कना बन्द हो गई अल्लाह रखे सोच में पड़ गया।

हमने फिर समझाना शुरू किया कि ''मियाँ! इस तरह तो तुम्हारा कोई काम वक़्त पर न हो सकेगा, इस वहम को छोड़ दो और अपना काम करो अल्लाह पर भरोसा रखो, वही काम का बनाने वाला है।''

अल्लाह रखे ने सोचा। अल्लाह का शुक्र है कि उसकी समझ में आ गया और वहम से बच गया। ❖❖

पृष्ठ ..06...का शेष

7. मधुमक्खी का फूलों से रस चूसना फिर बहुत ही सूक्ष्मदर्शिता के साथ ऊंची जगहों पर छत्ते तैयार करना अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानियों में से है, कौन है जो इस छोटे से कीड़े के दिल में यह बात डालता है और जो काम बड़ी बुद्धि वाले नहीं कर पाते वह काम एक छोटा सा कीड़ा करता है?।

8. अत्यंत बुढ़ापे को निकम्मी उम्र कहा गया है, जब आदमी की सारी शक्तियां उदासीन और बेकार हो जाती हैं और सब कुछ जानने-सीखने के बाद वह इस उम्र में सब कुछ भूल जाता है इसमें मानव के पतन और समाप्ति की ओर संकेत देकर अल्लाह के ज्ञान व शक्ति के बाकी रहने को बयान किया गया है।

9. यानी तुममें कोई यह नहीं करता कि अपने गुलामों को अपने धन इस प्रकार दे दे कि दोनों बराबर हो जाए, तो तुम अल्लाह के गुलामों के विषय में यह कैसे मानते हो कि अल्लाह ने अपनी शक्ति उनको दी और खुदा में साझीदार बना लिया।

10. बस जब सब कुछ अल्लाह की ओर से है तो फिर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पूजना कितनी बड़ी नाशुक्री है।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम युवाओं का योगदान

मौलाना इक़बाल नदवी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम युवाओं ने भी राष्ट्रीय एकता और आज़ादी के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया उनका बलिदान नेतृत्व और समर्पण भारतीय इतिहास का अभिन्न अंग है, उन्होंने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिए न केवल सामाजिक राजनीतिक आन्दोलन चलाए बल्कि अपने प्राणों की आहूति देने में भी पीछे नहीं रहे आइये एक दृष्टि स्वतंत्रता संग्राम की उन प्रमुख घटनाओं पर डालते हैं जिनमें मुस्लिम भाइयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है 1857 ई0 की क्राँति में बहादुरशाह ज़फर, लियाक़त अली मौलवी अहमदुल्लाह शाह जैसे लोगों ने हज़ारों युवाओं के साथ मिलकर अंग्रेज़ों से संघर्ष किया जिसके कारण बहादुर शाह ज़फर के दोनों बेटों के सर क़लम करके बहादुर शाह ज़फर के सामने थाली में पेश किये गये बहादुर शाह ज़फर को गिरफ़्तार करके रंगून भेज दिया गया, जहाँ से फिर वह कभी भारत वापस नहीं आ सके, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद 1919 ई0 में सबसे युवा कांग्रेस के अध्यक्ष बने जिन्होंने अल हिलाल और अल बलाग़ जैसे उर्दू अख़बारों के माध्यम से भारतीय लोगों में क्रांति की ज्वाला भड़का दी अंग्रेज़ो भारत छोड़ो के प्रमुख नेता बने।

अशफाक़ उल्लाह खान शहीद, काकोरी काण्ड के प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे सरकारी खज़ाना लूटने की योजना में भाग लिया अन्य लोगों के साथ ब्रिटिश सरकार ने इनको भी गिरफ़्तार कर लिया और 1927 ई0 में फाँसी के फंदे को मुसकुराते हुए चूम लिया जिससे यह साबित होता है कि उनके अन्दर अपने देश के लिए अपने प्राणों को त्याग देने की भावना सदैव उत्पन्न रहती थी।

सीमान्त गाँधी खान अब्दुल गफ़्फ़ारः—

अफग़ान सीमा क्षेत्र के नेता जिन्हें सीमान्त गाँधी भी कहा जाता है उन्होंने खुदाई खिदमतगार नामक संगठन बना कर अहिंसा का मार्ग चुना उनके अनुयाई अधिकतर युवा थे जो भारत को अंग्रेज़ों के शासन से स्वतंत्र कराने के लिए संगठित हुए थे।

अली बिरादानः—

मौलाना मोहम्मद अली ज़ौहर एवं मौलाना मोहम्मद शौकत अली ने खिलाफत आन्दोलन के माध्यम से नवजवानों को एकजुट किया।

गाँधी जी के साथ मिलकर असहयोग आन्दोलन का भी समर्थन किया। नवम्बर 1930 से 19 जनवरी 1931 तक लन्दन में गोलमेज़ काफ्रेंस हुई वह बीमार होने के बावजूद इसमें शरीक़ हुए उसमें उन्होंने एक ऐतिहासिक अशांत भावनात्मक और साहसी भाषण दिया उदाहरण के लिए कुछ शब्दों को प्रस्तुत किया जाता है। उन्होंने कहा ''मैं भारत में मुसलमानों को गुलामी का जीवन व्यतीत करने के लिए नहीं छोड़ सकता, मैं गुलाम भारत में मर कर दफ़न नहीं होना चाहता हूँ, अगर आप मुझे आज़ादी नहीं देते तो मुझे यहीं इंग्लैण्ड में दफ़न कर दीजिए। उस समय वहां के प्रधानमंत्री ने कहा कि तुम मुझ से किस तरह की आज़ादी चाहते हो, मोहम्मद अली ने कहा कि ऐसी आज़ादी चाहते हैं जैसे तुम हमें जब चाहते हो उठाकर जेल में डाल देते हो। मैं जब चाहूं तुम्हें गिरफ़्तार करके कारावास में डाल दूं उनके इन शब्दों में देश भक्ति आत्मविश्वास और समाज के अधिकारों की माँग का प्रतीक दिखाई देता है।

टीपू सुलतानः—

टीपू सुलतान शहीद को स्वतंत्रता संग्राम का अग्रदूत भी कहा जाता है, भगत सिंह सुभाष चन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारी टीपू सलतान के जीवन को प्रेरणा का स्रोत मानते थे।

उनका सैनिक अनुशासन और कौशल युद्ध अंग्रेज़ों के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी, टीपू सुल्तान ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के खिलाफ़ अनेकों युद्ध लड़े जिन्हें मैसूर युद्ध कहा जाता है। 1799 ई0 को चौथे मैसूर युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की उनका यह अंतिम युद्ध अंग्रेज़ों और उनके सहयोगियों (मराठा और निज़ाम) के विरुद्ध था उनसे कुछ लोगों ने कहा कि आप इस युद्ध में शरीक़ ना हों बल्कि अंग्रेज़ों से संधि कर लें इस पर उन्होंने जवाब दिया जो इतिहास के पन्नों में प्रसिद्ध है कि शेर की एक दिन की ज़िन्दग़ी, गीदड़ की सौ साला ज़िन्दगी से बेहतर है।

वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे नायक थे जिन्होंने कभी भी अंग्रेज़ों से झुक कर संधि नहीं की।

० बख़्त खान मेरठ और दिल्ली में क्रांतिकारियों के सेनापति बनाए गये।

० शाहनवाज़ खान नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के आज़ाद हिन्द फौज के प्रमुख सैन्य अधिकारी थे।

० हबीबुर्रहमान आज़ाद हिन्द फौज के वरिष्ठ कमाण्डर बनाए गये।

० हसरत मोहानी इन्क़लाब ज़िन्दाबाद का नारा देने वाले उर्दू के अच्छे कवि और एक बड़े क्रांतिकारी थे।

० बेग़म हज़रत महल स्वतंत्रता संग्राम की उन वीरांगनाओं में से थी जिन्होंने 1857 ई0 की प्रथम भारतीय स्वतंत्रता क्रांति में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ शौर्य नेतृत्व और बलिदान का परिचय दिया वह अवध क्षेत्र की एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थी वह नवाब वाजिद अली शाह जो अवध के अंतिम नवाब थे उनकी पत्नी थीं। 1857 ई0 की क्रांति में उन्होंने लखनऊ और आस पास के क्षेत्रों में क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया 1856 को जब अंग्रेज़ों ने उनके पति को गिरफ़्तार कर लिया तब बेग़म हज़रत महल ने लखनऊ की सत्ता संभाली और लखनऊ के *Residency* क्षेत्र में उन्होंने अंग्रेज़ी सेना को भारी नुक़सान पहुँचाया उनके निकट देशभक्ति और स्वतंत्रता ही सबसे प्रथम कार्य था, भारत की आज़ादी में उनको पहली मुस्लिम महिला सेनानी माना जाता है 1879 ई0 नेपाल में उनका निधन हुआ उन्होंने ब्रिटिश सरकार के अधीन होने के बजाए निर्वासन का मार्ग चुना जो उनके आत्म सम्मान और गौरव शाली जीवन के बारे में दर्शाता है।

मौलाना हुसैन अहमद मदनी मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान सिवहारवी और इन जैसे हज़ारों नाम है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए हर समय हर प्रकार की कुर्बानी पेश करने के लिए तैयार रहते थे मौलाना हुसैन अहमद मदनी और महमूदुल हसन देवबन्दी को माल्टा की जेल में इसलिए डाला गया था कि यह क्रांतिकारियों को एक जुट करने में लगे रहते थे। रेशमी रूमाल आन्दोलन के माध्यम से ब्रिटिश राज के खिलाफ़ विदेशों से सम्पर्क किया यह एक गुप्त आन्दोलन था जब अंग्रेज़ी सरकार को इसकी भनक लगी तो 1916 से 1920 ई0 तक माल्टा द्वीप की जेल में रखा गया।

स्वतंत्रता संग्राम से अगर मुस्लिम समाज के योगदान को निकाल दिया जाए तो भारतीय इतिहास में कुछ बाक़ी ही नहीं रहेगा इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरे समाज के लोगों ने इसमें भाग नहीं लिया परन्तु मुस्लिम समुदाय की जो भागीदारी रही उससे यह साबित होता है कि अगर मुसलमानों ने सर पर कफ़न ना बाँधा होता तो बहुत कठिन था भारत को आज़ाद कराना। इसलिए इतिहास से मुस्लिम समाज के योगदान को निकालना इतिहास के साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इन प्रमुख घटनाओं का वर्णन करना हर उस वास्तविकता को दर्शाता है जिसको आज स्वीकार करना बहुत कठिन हो रहा है।

❖❖❖

जुल्म का अंजाम

अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

ज़ालिम की ज़िनदग़ी कम, ग़ैबी निज़ाम है।
ज़ालिम ज़लील ख्वार है, ग़ैबी निज़ाम है।।

ज़ालिम की नहूसत से, मरते हैं परिन्दे भी।
आफ़त, बला का आना, ग़ैबी निज़ाम है।।

अबरहा चला ढ़ाने, खान-ए-काबा।
चिड़ियों ने ख़बर लेली, ग़ैबी निज़ाम है।।

जंगे बदर में काफ़िर, तादाद में ज़्यादा।
अल्लाह ने फतेह दी, ग़ैबी निज़ाम है।।

मजलूम को सताना, जुल्मो सितम का करना।
खुद पे कहर को ढाना है, ग़ैबी निज़ाम है।।

मखलूक़ पे रहम हो, खालिक़ का हुक़्म है।
तुम पर भी रहम होगा, ग़ैबी निज़ाम है।।

फिरऔन ने बच्चों को, क़त्ल किया था।
खुद भी हलाक़ हो गया, ग़ैबी निज़ाम है।।

हक़ के मुकाबले में, बातिल ने लड़ी जंग।
हक़ को फतेह मिलेगी, ग़ैबी निज़ाम है।।

क़िबल-ए-अव्वल का, अल्लाह मुहाफिज़ है।
सिद्दीक़ी कह रहा है, ग़ैबी निज़ाम है।।

❖❖❖

स्वास्थ्य

तंबाकू की आदत पड़ सकती है भारी

डॉ0 सुमित अग्रवाल

तंबाकू छोड़ने से लाइफ में आएंगे पॉजिटिव बदलावः—

अगर आप तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में कर रहे हैं तो मान लें कि आप खुद को धोखा दे रहे हैं। भारत में कई साल पहले ही सार्वजनिक जगहों पर स्मोकिंग पर रोक लग चुकी है, लेकिन आज भी पब्लिक प्लेस पर स्मोकिंग करते हुए लोग दिख जाते हैं। अगर आप सिगरेट नहीं पीते हैं और सोचते हैं कि आसपास किसी दूसरे के स्मोक करने से फर्क नहीं पड़ेगा, तो आप ग़लत हैं। इसका प्रभाव स्मोकर से ज़्यादा आप पर पड़ता है। इसलिए कोशिश करें कि आप खुद तो तंबाकू के सेवन की आदत छोड़ें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। यह बेहतर स्वास्थ्य की दिशा में एक सकारात्मक पहल है।

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें तो आपके आसपास कोई सिगरेट पी रहा है और धुआं आप तक पहुंच रहा है, तो आप भी पैसिव स्मोकर की श्रेणी में हैं। डॉक्टर सुमित अग्रवाल कहते हैं कि पैसिव स्मोकिंग भी ऐक्टिव स्मोकिंग जितनी ही खतरनाक है। ये धुआं जब किसी व्यक्ति की सांसो के द्वारा उसके फेफड़ों तक पहुंचता है, तब उसे भी स्मोकिंग जितना ही नुकसान उठाना पड़ता है। और दरअसल इस प्रक्रिया को ही पैसिव स्मोकिंग कहते हैं। इसमें व्यक्ति ना चाहते हुए भी स्मोकिंग के दुष्प्रभाव का शिकार हो जाता है। कई मामलों में पैसिव स्मोकिंग से भी हार्ट अटैक, स्ट्रोक और कैंसर जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें तो अगर आप स्मोकिंग या तंबाकू का सेवन बंद करते हैं, तो लगभग 24 घंटे के भीतर ही इसका असर आपके शरीर पर दिखने लगता है। इससे ब्लड सर्कुलेशन भी सही होता है। इससे आप आसानी से सांस ले पाते हैं। डॉक्टर्स की मानें तो तंबाकू के धुएं में 7000 केमिकल्स होते हैं, जिनमें से 50 कैंसर की वजह होते हैं। अगर आपके आसपास कोई स्मोकिंग करता है तो नुकसान पहुंचाने वाले कंपाउंड्स पैसिव स्मोकर के लंग्स में पहुंच जाते हैं।

31 मई को दुनिया में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसलिए की ताकि लोगों को तंबाकू का सेवन करने के कारण होने वाले नुक़सान के बारे में जागरूक किया जा सके। इस बार के वर्ल्ड नो टोबैको डे पर डब्ल्यूएचओ की थीम Unmasking the Appeal of tobacco products थी, जो तंबाकू और इसके उत्पादों से जुड़े इंडस्ट्री की नीतियों को उजागर करती है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह आदत जीवन को खत्म करने की ओर बढ़ता क़दम है और इसके लिए ज़रूरी है कि आप इस आदत को बदलें। अभी नहीं तो कभी नहीं का सिद्धांत यहां पर भी लागू होता है। यह मौका है, जब आप तंबाकू को छोड़ कर अपने जीवन को नया मौका दे सकते है जहां सफल होने पर आपको ही सब से ज़्यादा खुशी होगी।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

'गुस्ले काबा का वार्षिक समारोह आयोजितः—

मक्का, (यूएनआई) रिपोर्ट के मुताबिक मक्कतुल मुकर्रमा में गुस्ले काबा के लिए एक आध्यात्मिक समारोह आयोजित किया गया। काबे को गुलाब जल, ऊद, इत्र और ज़मज़म के पानी से गुस्ल दिया गया। अरब मीडिया के अनुसार, हर साल की तरह इस साल भी मुहर्रम की 15 तारीख को काबा के अंदरूनी हिस्से को गुस्ल दिया गया। काबा की भीतरी दीवारों, फर्श और दरवाजों को ज़मज़म के पानी और गुलाब जल से धोया गया। इस मुबारक काम के लिए, काबा के प्रमुख ने फज्र की नमाज के बाद काबा का दरवाजा खोला और फिर अधिकारियों ने प्रवेश किया। गुस्ल के बाद, इसे ऊद, गुलाब जल और अन्य सुगंधों से सुगंधित किया गया। इस आध्यात्मिक दृश्य की तस्वीरें और वीडियो भी आधिकारिक साइटों पर अपलोड किए गए हैं। सुरक्षा बलों ने स्नान के अवसर पर काबा के चारों ओर एक सुरक्षा घेरा स्थापित किया यह याद रखने योग्य बात है कि काबा को साल में दो बार ज़मज़म और गुलाब जल से गुस्ल दिया जाता है, पहली बार मुहर्रम में और दूसरी बार शाबान के महीने में।

फ्रांस में मरने के क़ानूनी अधिकार से संबंधित विधेयक पारित, 90 प्रतिशत लोगों ने इसका समर्थन कियाः—

फ्रांस की संसद ने विवादास्पद लेकिन ऐतिहासिक राइट—टू—डाई बिल को प्रारंभिक मंजूरी दे दी है। इस कानून के तहत गंभीर असाध्य बीमारी से पीड़ित और असहनीय दर्द का सामना कर रहे लोग कानूनी तौर पर अपनी जिंदगी खत्म करने के लिए मेडिकल सहायता मांग सकेंगे। इस बिल को फ्रांस की नेशनल असेंबली ने 305 वोटों के पक्ष में और 199 वोटों के विरोध में पारित किया। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने इस कदम को भाईचारे की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है। हालांकि, रूढ़िवादी दलों की ओर से इसका कड़ा विरोध हो रहा है। कानून के मुताबिक, 18 साल से अधिक उम्र के, फ्रांस के नागरिक या स्थायी निवासी असहनीय और असाध्य बीमारी के अंतिम चरण में रहने वाले मरीज इसके लिए आवेदन कर सकेंगे। इस प्रक्रिया में स्वैच्छिक आवेदन, मेडिकल टीम की मंजूरी और समीक्षा अवधि जैसे कई सुरक्षा उपाय शामिल हैं। अगर मरीज खुद दवा नहीं ले पा रहा है, तो डॉक्टर या नर्स की मदद से दवा दी जा सकती है। दवा घर पर, नर्सिंग होम में या अस्पताल में दी जा सकती है। यह विधेयक अब बहस के लिए फ्रांसीसी सीनेट के पास जाएगा, लेकिन असहमति की स्थिति में संसद के निचले सदन का अंतिम निर्णय होगा। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार, फ्रांस की सीनेट ने इस विधेयक को मंजूरी दे दी है।

पक्ष में—305

विरोध में—199

कुल मतदाता—561

भारतवंशी सबीह बने ऐपल के सी0ओ0ओ0ः—

दुनिया की बड़ी टेक कंपनी ऐपल ने भारतीय मूल के सबीह खान को अपनी कंपनी का नया चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर (COO) बनाया है। वह इस महीने के अंत में जेफ विलियम्स की जगह लेंगे, जो 2015 से इस पद पर हैं। सबीह मुरादाबाद में पैदा हुए थे और बाद में सिंगापुर और फिर अमेरिका चले गये।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः **22/07/2025** تاریخ ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक़्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961 के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 06

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3